।। श्री हरये नमः ।।

।। श्री हरि-गुरु-वैष्णव चरण कमलेभ्यो नमः।।

निवेदन

श्रीराधाकपा आरती संग्रह एवं श्रीराधाकपा चालीसा श्रीकिशोरीजी के अपने जनों के कर कमलों में समर्पित करते हुये बड़ी प्रसन्नता है। इस पुष्प की कुछ पंखुड़ियाँ महापुरुषों द्वारा रचित है, उनके चरणों में प्रणाम करते हुये उन पंखुड़ियों का संकलन किया जा रहा है। कुछ पंखुड़ियाँ श्रीकिशोरीजी की प्रेरणा एवं कपा का प्रसाद है। इस लघु पुष्प में कोई अच्छी खुशबु मिले वह पुष्प की विशेषता है, माली की नही। लेकिन जो कमियाँ रह गई हैं वह माली की अयोग्यता है। कपया क्षमा करें। गुरुजनों के संकोचवश हिम्मत तो नहीं हो रही थी, परन्तु बहुत दिनों से भक्तों का आग्रह बना हुआ था, कथा के विश्राम में गाई जाने वाली आरती यदि पुस्तकाकार रूप में सबको सुलभ हो जाये तो साथ में बोलने एवं बाद में भी नित्योपयोग में सुविधा रहेगी। बारम्बार के इस आग्रह को भगवत इच्छा मान कर प्रस्तुत पुष्प समर्पित किया जा रहा है, कपया स्वीकार करें।

छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई। सुनिहहिं बालबचन मन लाई।।
जानि कपाकर किंकर मोहू। सब मिली करहु छाड़ि छल छोहू।।
देहु दया करि सो वरदानू। साधु समाज भणित सन्मानू।।
त्वदीयं वस्तु गोविन्दः तुभ्यमेवसमर्पयेत।।

भगवत भागवत का

लक्ष्मण शरण

श्रीराधाकपा-गुरुनिवास,

श्रीवन्दावन धाम

!! श्री हरये नमः !!

आरती का स्वरूप

आरती को 'आरात्रिका' अथवा 'आरार्तिक' और 'नीराजन' भी कहते है। पूजा के अन्त में आरती की जाती है। पूजन में जो त्रुटि रह जाती है, आरती से उसकी पूर्ति होती है। स्कन्दपुराण में कहा गया है-

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं यत् अर्चन पूजनं हरेः ।
सर्वे सम्पूर्णतामेति कते नीराजने शिवे ।।

पूजन मन्त्रहीन और क्रियाहीन होने पर भी नीराजन (आरती) कर देने से उसमें सारी पूर्णता आ जाती है।

आरती से पहले मूलमन्त्र (भगवान) जिस देवता का जिस मन्त्र से पूजन किया गया हो, उस मन्त्र के द्वारा तीन बार पुष्पांजलि देनी चाहिये और ढ़ोल, नगारे, शंख, घड़ियाल आदि महावाद्यों के तथा जय-जयकार के शब्द के साथ शुभ पात्र में घत से या कपूर से विषम संख्या की अनेक बत्तियां जलाकर आरती करनी चाहिए।

साधारणतः पाँच बत्तियों से आरती की जाती है, इसे 'पंचप्रदीप' भी कहते है। एक, सात या उससे भी अधिक बत्तियों से आरती की जाती है। कुमकुम, अगर, कपूर, चन्दन, रूई और घी, धूप की एक, पाँच या सात बत्तियाँ बनाकर शंख, घंटा आदि बाजे बजाते हुए आरती करनी चाहिए।

आरती के पाँच अंग होते है। प्रथम दीपमाला के द्वारा, दूसरे जलयुक्त शंख से, तीसरे धुले हुए वस्त्र से, चौथे आम और पीपल आदि के पत्तों से और पाँचवें साष्टांग दण्डवत् से आरती करे। आरती उतारते समय सर्वप्रथम भगवान की प्रतिमा के चरणों में उसे चार बार, दो बार नाभिदेश में, एक बार मुखमण्डल पर और सात

बार समस्त अंगों पर घुमायें।

यथार्थ में आरती पूजन के अन्त में इष्टदेव की प्रसन्नता के हेतु की जाती है। इसमें इष्टदेव को दीपक दिखाने के साथ ही उनका स्तवन तथा गुणगान किया जाता है।भक्तों की भावना के अनुसार आरती का तात्पर्य अपने इष्ट की नजर उतारना भी होता है।आरती उतारने के बाद आरती अपने सिर पर लगाते हैं, इसका तात्पर्य अपने इष्ट की नजर अपने सिर पर लेकर अपने इष्ट को प्रसन्न देखना होता है।

कंचन थार आरतीं नाना । जुबतीं सजें करहिं सुभ गाना ।।
करहिं आरती आरतिहर कें । रघुकुल कमल विपिन दिनकर कें ।।

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम् ।
आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ।।

श्री राधा कपा सेवा ट्रस्ट (रजि०)
को दी गई सहयोग राशि आयकर की
धारा ८० जी के अर्न्तगत कर मुक्त है।

विषयसूची

निवदेन	
आरती का स्वरूप	**आरती सं०**
आरती श्रीगणेशजी :-	
आरती गजवदन विनायक की	१.
आरती श्रीसीतारामजीः-	
अपना रामजी के आरती	११.
आरती करो रघुवर की	१८.
आरती कीजे राम रघुवर की	१०.
आरती चारों पहुना की	२२.
आरती रामलला की कीजै	६.
आरती रघुवर लाला की	१६.
आरती सिया दुलारी की	४.
करु आरती सियावर लाल की	१५.
करु आरती अवध ललनवाँ की	२६.
करु मिलि आरती पिया और प्यारी की	१४.
करो सब आरती सुखदाई	२०.
गाओ गाओ री प्रिया प्रितम की	२.
जय श्रीसीताराम	६.
जय जानकीनाथा	८.
तन मन धन राघव पै वारूँ	१३.
दिव्य दम्पति के आरती	१२.
नख शिख छबिधर की	७.
भई प्रगट कुमारी	३.
भये प्रगट कपाला	५.
मिथिला में आये पहुना चार	२३.
रंगीली आरती करु नीकी	२५.

सखी हे आरती उतारु रघुनंदन	२४.
सखी आरती सिय रघुनंदन की	२१.
सिया सियाराम हो	१७.
सुन्दर वदन विलोकी के	१६.
आरती श्रीहनुमानजीः-	
आरती अंजनिनंदन की	२७.
आरती करिये अंजना के वारे की	२८.
आरती कीजै हनुमान लला की	२६.
जय श्रीहनुमंता	३०.
आरती श्रीराधाकष्णजीः-	
अधर धर मुरली बजैया की	४१.
आरती करो बजनारी लै कंचन थारी	४४.
आरती कुंजबिहारी की	४०
आरती कष्णकन्हैया की	३२.
आरती बालकष्ण की कीजै	३४.
आरती प्रीतम प्यारी की	५१.
आरती मेरे प्यारे की	३७.
आरती राधारानी की	४६.
गावो सखि आरती पिया और प्यारी	४२.
जय कान्हा काला़	३५.
जय जगदीश हरे	५०.
दिव्य दंपति की आरती उतारो	३३.
बाँकेबिहारी तेरी आरती	३६.
भजो राधे कष्ण राधे कष्ण	५२.
मोहन मदनगोपाल की	४७.
राधावर ब्रजधर गिरिधर की	४३.
राधा संग मोहन हमारे	४६.
श्यामा तेरी आरती	४८.
सब आरती उतारो मेरे लालन की	३८.

सब आरती उतारो मेरे प्राणधन की	३६.
सखि आरती करिये युगलवर की	४५.
श्रितकमला कुच मंडल धत कुंडल ऐ	३१.
आरती श्रीशंकरजीः-	
आरती करो हर हर की	५६.
आरती शंकरदानी की	५३.
आरती श्रीशिवशंकर की	५८.
करु आरती परम विशाल आज	५७.
जय गंगाधर हर जय गिरिजाधीशा	५४.
जय शिव ओंकारा	५५.
आरती श्रीवराह भगवानः-	
यज्ञ वराह की आरती कीजै	५६
आरती श्रीकपिल भगवानः-	
आरती कपिलनारायण की	६१.
आरती कीजे कपिलहरि की	६०.
आरती श्रीनसिंह भगवानः-	
आरती कीजे नरहरि की	६३.
श्रीनसिंह सरकार की सब आरती कीजे	६२.
आरती श्रीवामन भगवानः-	
आरती कीजै बावन की	६५.
आरती कीजै श्रीवामन की	६४.
आरती श्रीमधुसूदन भगवानः-	
श्रीमधुसूदन की आरती मिलि कीजै	६६.
आरती श्रीसूर्य भगवानः-	
आरती भुवनभास्कर की	६७.
आरती श्रीगौमाता कीः-	
आरती कीजै गौमाता की	६८.

आरती श्रीआर्चाय कीः-

आरती कीजै आचारज की ६६.
आरती श्रीसर्वेश्वर की ७०.

आरती श्रीतुलसीदासजी महाराजः-

आरती करो तुलसी की,मात हुलसी की ७१.

आरती श्रीतुलसी मैयाः-

नमो नमो तुलसी महारानी ७२.

आरती श्रीसद्गुरु भगवानः-

आरती श्रीगुरुदेव की कीजै ७५.
करु आरती अपने गुरुवर की ७६.
ज्योति से ज्योति जगावो ७४.
मिलि कीजै सद्गुरु आरती ७३.

आरती श्रीसत्संग कीः-

आवू आवू आवू बहिना आरती उतारू हे ७७.

आरती श्रीमद्भगवतगीता कीः-

जय भगवद्गीते ७८.

आरती श्रीमद्भक्तमाल कीः-

आरती उतारो सखि सियावरलाल की ८३.
आरती उतारो सखि श्रीभक्तमाल की ८४.
आरती भक्तमाल की कीजै ८०.
आरती भक्तमाल की करिये ७६.
भक्तचरित रसमाल की ८५.
भक्तमाल जी की आरती ८८.
राघव को लागत है अति प्यारी ८७.
राघव की हिय हार ८२.
सखि आरती करो भक्तमाल की ८६.
श्रीसरसबिहारीलाल की ८१.

श्री सद्गुरु कपाल की ८६.

आरती श्रीरामचरित मानस कीः-

आरती उतारु सखि मानस रसाल की ६६.
आरती करो मानस की,रामसिय जस की ६२.
आरती मानस की कीजै ६१.
आरती श्रीरामायणजी की ६०.
आरती श्री मन्मानस की ६३.
कीजै आरती आजु श्री रामचरित मानस की ६५.
जय श्रीराम कथा ६८.
जय राघव सीता ६६.
जग की मंगल करणी १००.
मानस की आरती उतारो ६४.
मंगल आरती उतारु ६७.
हम सब श्री युगलचरण की १०१.

आरती श्रीमद्भागवत कीः-

आरती अतिपावन पुरान की १०२.
आरती करो नर नारी ले मंगलथारी ११०.
आरती कीजे शुकवानी की १०६.
आरती शुकवाणी पुराण की १०६.
आरती श्रीभागवत प्यारी १०३.
आरती श्रीशुकवानी की १०५.
करु आरती श्रीमद्भागवत की १०८.
जय श्रीमद्भागवत १०७.
भागवत भगवान की है आरती १०४.
श्रीभागवत पुराण की मिलि १११.

श्रीराधाकपा चालीसा

आरती १

आरति गजवदन विनायक की।
सुर-मुनि-पूजित गणनायककी ।।टेक।।
एकदंत शशिभाल गजानन,
विघ्नविनाशक शुभगुण कानन,
शिवसुत वन्द्यमान-चतुरानन,
दुःखविनाशक सुखदायककी ।। सुर०।।
रिद्धि-सिद्धि-स्वामी समर्थ अति,
विमल बुद्धि दाता सुविमल-मति,
अघ-वन-दहन, अमल अविगत गति,
विद्या- विनय- विभव- दायककी ।।सुर०।।
पिंगलनयन, विशाल शुंडधर,
धूम्रवर्ण शुचि वज्रांकुश-कर,
लम्बोदर बाधा-विपत्ति-हर,
सुर-वन्दित सब विधि लायककी ।।सुर०।।

आरती २

गाओ गाओरी प्रिया प्रियतम की आरती गाओ।।
आस पास सखियाँ सुख दैनी,
सजि सोलह श्रंगार सुनैनी,
वीण सितार लिये पिकबैनी, गाइ सुराग सुनाओ।।
अनुपम छबि धरि दंपति राजे,
नील पीत पट भूषण भ्राजे,
निरखत अगणित रवि शशि लाजे,नैननको फल पाओ।।
नीरज नैन चपल चितवन में,
चन्द्र वदन मधुरे मुस्कन में,
कारी घुंघरारी जुलफन में,अपनों मन अरुझाओ।।

कंचन थार सँवारी मनोहर,
घत कपूर शुभ बाती ज्योति कर,
मुरछल चँवर लिये रामेश्वर, हरषि सुमन बरसाओ।।

आरती ३

भई प्रगट कुमारी, भूमिविदारी जन हितकारी भयहारी।
अतुलित छबि भारी, मुनिमन हारी, जनकदुलारी सुकुमारी।।
सुन्दर सिंहासन तेहि पर आसन कोटि हुतासन द्युतिकारी।
सिर छत्र विराजे सखिगण भाजे निज निज कारज करधारी।।
सुर सिद्ध सुजाना हनहि निशाना चढ़े विमाना समुदाई।
बरषहि बहु फूला मंगल मूला अनुकूला सिय गुण गाई।।
देखहिं सब ठाढ़े लोचन गाड़े सुख बाढ़े उर अधिकाई।
अस्तुति मुनि करहिं आनंद भरहिं पायन्ह परहिं हरषाई।।
ऋषिनारद आये नाम सुनाये सुनि सुख पाये नप ज्ञानी।
सीता अस नामा पूरणकामा सब सुखधामा गुण खानी।।
सिय सन मुनिराई विनय सुनाई समय सुहाई मदुवानी।
लालनि तनु लीजै चरित सुकीजै यह सुख दीजै नप रानी।।
सुनि मुनिवर बानी सिय मुस्कानी लीला ठानी सुखदाई।
सोवत जनु जागी रोवन लागी नप बड़भागी उर लाई।।
दम्पति अनुरागेउ प्रेम सुपागेउ तेहिं सुख लागेउ मनलाई।
अस्तुति सिय केरी प्रेमलतेरी बरनि कुचेरी सिर नाई।।
दोहा : निज इच्छा मख भूमि ते प्रगट भई सिय आई।
चरित किये पावन परम वरधन मोद निकाई।।

आरती ४

आरती सियादुलारी की,श्रीराघव प्राणपियारी की।।
पड़्यो महि बारहवर्ष अकाल,
भये सब जीव बहुत बेहाल,
सुनो अर्जी मिथिलेश नपाल,

भाग्य भो क्रूर, दुःख भरपूर, होय कस दूर,
सुने जग कौन दुखारी की,श्रीराघव प्राणपियारी की।।१।।
चलाये जनक भूप जब हल,
समस्या सबकी हो गई हल,
मेघ घन करते कोलाहल,
कपा की दष्टि, भई नभवष्टि, सुखी सब सष्टि,
प्रगट भइ भूमि विदारी की,श्रीराघव प्राणपियारी की।।२।।
सिंहासन शुभ्र सिया राजे,
साथ में अष्ट सखी साजे,
बजावे देव हरषि बाजे,
करें जयकार, पुष्प बौछार, होयँ बलिहार,
देखि हरषित नर नारी की,श्रीराघव प्राणपियारी की।।३।।
आरती करे सुनयना मात,
सियानुज लखि दीदी हरषात,
नयन से प्रेमाश्रु छलकात,
जनक जी संग, हैं पुलकित अंग, हृदय श्रीरंग,
जियें जुग जुग सुकुमारी की,श्रीराघव प्राणपियारी की।।४।।

आरती ५

भये प्रगट कपाला दीन दयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनिमन हारी अद्भुत रूप निहारी।।
लोचन अभिरामा तनु धनश्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषण वनमाला नयन विशाला शोभा सिन्धु खरारी।।
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि विधि करौं अनन्ता।
माया गुन ज्ञानातीत अमाना वेद पुरान भनन्ता।।
करुणा सुख सागर सबगुण आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी अति अनुरागी प्रगट भये श्री कंता।।
ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहे।

मम उर सो वासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहे।।
उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुस्काना चरित बहुत विधि कीन्ह चहे।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहे।।
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै शिशु लीला अति प्रिय शीला यह सुख परम अनूपा।।
सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुर भूपा।
यह चरित जे गावहिं हरि पद पावहिं ते न परहिं भव कूपा।
दो० विप्र धेनु सुरसंत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गोपार।।

आरती ६

आरती रामलला की कीजे।
चारों कुँवर को हिय धरि लीजे।।
दशरथसुवन कौशिलानंदन,
भरत लखन अरु शत्रुनिकंदन,
दुइसाँवर दुइगौर लखीजे।।१।।
दशरथ अजिर अवध आंगन में,
बहुतै भीर नेग मांगन में,
प्राणेश्वर को लखि लखि जीजे।।२।।
युगयुग जीवैं चारों लालन,
देत अशीषें शिव चतुरानन,
मुनि मन मानस हंस पतीजे।।३।।
मातु कौसिला करे आरती,
तन मन धन चहुँसुत पै वारती,
सियाअनुज चरणन चित दीजे।।४।।

आरती ७

नखशिख छबिधर की, आरती करिये सियावर की।।
नीलपीत अम्बर अतिराजे,तिलकललित भालन पर भ्राजे,

मुख निरखत शारद शशि लाजे,कुमकुम केसर की।।
कर्णफूल कुण्डल झलकतहै,चन्द्रहार मोतिन हलरत है,
करकंकण दामिनि दमकत है, जगमग दिनकर की।।
मदुतरुवन में अधिक लुनाई,हासविलास न कछु कहिजाई,
चितवन की गति अतिसुखदाई, मन ही मन फरकी।।
सिंहासन पर चँवर ढुरत है,झांझ बजत जैजै उचरत है,
सादर स्तुति देव करत हैं, कोटिन अनुचर की।।

आरती ८

जय जानकीनाथा, प्रभु जय श्रीरघुनाथा।
दोउ कर जोरे विनवौं, प्रभु मेरी सुन बाता।।
तुम रघुनाथ हमारे, प्राण पिता माता।
तुम हो सजन संगाती, भुक्ति मुक्ति दाता।।
चौरासी के फंद छुड़ावो, मेटो यम त्राशा।
निशदिन संग मोहि राखो, अपने संग साथा।।
सीताराम लक्ष्मण भरत शत्रुहन,संग चारों भैया।
जगमग ज्योति विराजे,शोभा अति लहिया।।
हनुमत नाद बजावत, नेवर ठुमकाता।
कंचन थाल आरती, करत कौशल्यामाता।।
क्रीटमुकुट कर धनुष विराजत, शोभा अतिभारी।
मनीराम दर्शनकरि, पल पल बलिहारी।।

आरती ९

जय श्रीसीताराम, प्रेम से बोलो सीताराम।
स्वीकारो प्रभु आरति, द्रवउ दया के धाम।।
सिंहासन पर राजत, सियजू राजाराम।
छटा प्रियाप्रीतम की, शोभा ललित ललाम।।
भरत लखन रिपुसूदन, चँवर छत्र धारी।
पवनपुत्र बजरंगी, चरणन बलिहारी।।

वीणा वेणु पखावज, शिव डमरू बाजे।
मदुल हँसन रघुवर की,अनुपम छवि छाजे।।

आरती १०

आरती कीजे राम रधुवर की।
दशरथनंदन सियाजु के वर की।।
आरती हनुमत के मन भावे।
राम कथा नित भोला गावे।।
भक्ति का दीपक प्रेम की बाती।
साधू संत करें दिन राती।।
आरती हनुमत के मन भावै।
रामकथा नित भोला गावे।।

आरती ११

अपना रामजी के आरती उतारू हे सखी।
चारों दुलहा के आरती उतारू हे सखी।।
सोने के थाल कपूर की बाती।
साजि कपूर बाती आली मुस्काती।
भरि भरि नयना निहारू हे सखी।। १ ।।
कौसल्या के राम, सुमित्राजी के लछुमन।
सुमित्राजी के लछुमन, सुमित्राजी के शत्रुहन।
कैकई के भरत भुआल हे सखी।। २ ।।
साँवर राम गौर बबुवा लछुमन।
गौर बबुवा लछुमन गौर बबुवा शत्रुहन।
साँवर भरत भुआल हे सखी।। ३ ।।
वाम भाग सोहे जनकदुलारी।
दहिनें लछिमन धनुवाधारी।
चरणों में अंजनीकुमार हे सखी।। ४ ।।

आरती १२

दिव्य दम्पति की आरती उतारू हे अली।
राजे कौसल्या के लाल, औ सुनयना की लली।।
माथे मणिन के मौर, साहे मोतीलर छोर,
जामे नयना मरोर, जेसे जल में मछली।।
गर मोतिन के हार, लखि जिया बलिहार,
मेरे पाहुन सरकार, मिसरी की सी डली।।
बाजे शंख मिरदंग, वीणा वेणु और चंग,
प्रगटी चरणों से गंग, जाको जल निर्मली।।
सब करें जै जै कार, नाचे कूदें नर नार,
सियानुज बलिहार, करि हैं सियाजु भली।।

आरती १३

तन मन धन राघव पै वारूँ, मैं तो आरती उतारूँ।।
शीश मुकुट मकराकत कुण्डल, भाले तिलक सँवारूँ।।
रत्न जटित गल माला सोहे, पहुना को सत्कारूँ।।
संग सिया सुखदानि सुहावनी, दोनों को हियरा में धारूँ।।
चरण कमल पर बलि बलि जाऊँ, कोमल चरण पखारूँ।।
सियाअनुज मनभावन पहुना, बहिना संग निहारूँ।।

आरती १४

करु मिलि आरती, पिया और प्यारी की,
जनकदुलारी की, अवधबिहारी की ।।
कंचनथार कपूर की बाती,
नयनन लखि सखि बलि बलि जाती,
विमल कनक सरयू जल झारी की ।।१।।
बैठे रघुवर कपा निकेता,
कनक सिंहासन सीय समेता,

तरकश कटि अरु शर धनुधारी की ।।२।।
क्रीटमुकुट कुण्डल सिर राजे,
भाल विशाल सुतिलक विराजे,
दग खंजन लगि अंजन कारी की ।।३।।
सिय सिर बेन्दि चन्द्रिका सोहे,
शचि इन्दिरा उमा लखि मोहे,
तन नीलाम्बर अंगिया सारी की ।।४।।
मंद मुस्कन गर में वनमाला,
दिये गलबहियाँ युगल कपाला,
सुमन बरसि सुर जय जयकार की ।।५।।
भरत, लखन, रिपुसूदन साथा,
मुरछल चँवर, व्यजन लिये हाथा,
अंजनिनंदन चरण पुजारी की ।। ६।।
जनम जनम के सुकत जागे,
पाप पुंज छबि लखि ते भागे,
सियाअनुज प्रभु प्रेम भिखारी की ।। ७ ।।

आरती १५

करु आरती सियावरलाल की।
देखो झाँकी बड़ी कमाल की।।
लखि लखि छबि सखि आरती उतारती।
साजि कपूर बाती कर महँ धारती।
मैं तो वारी जाऊँ नयन विशाल की।।
राम के मुकुट सोहे सिय सिर चन्द्रिका।
कानों में कुण्डल और प्यारे प्यारे झुमका।
कैसी शोभा तिलक बेन्दी भाल की।।
अरुण अधर पर मंद मुस्कान है।
नथिया बुलाक की अनोखी कैसी शान है।

छबि प्यारी सी रेशमी रूमाल की।।
चरणकमल की शोभा है न्यारी।
एक एक रेख पर जिया बलिहारी।
सियाअनुज के मानस मराल की।।

आरती १६

सुंदर वदन बिलोकि के नयनन फल लीजै।
जानकीबल्लभलाल की सखि आरति कीजै।।
कुण्डल ललित कपोलना द्युति अलक विराजे।
कण्ठा कण्ठ सुहावना गजमुक्ता राजै।।
पाग बनी जरतार की दुपटा द्युतिकारी।
पटुका है पंचरंग का मणि जड़ित किनारी।।
सियाजू के सोहे लाली चूनरी शोभित अतिन्यारी।
रसिकअलीजू की स्वामिनी अतुलित छबि भारी।।

आरती १७

सिया सियाराम हो शोभा सुखधाम हो।
मणिन के दियरा से आरती ललाम हो।।
रतनजड़ित सिर मुकुट विराजे कुंडल सोहे कान हो।
प्रेमीजन का मन मोहे मंद मुस्कान हो।।
बिके बिन दाम हो,कोटि कोटि काम हो।। १ ।।
चंद्रिका की उपमा न सिया सिर सोहे हो।
रचना रुचिर देखि पिया मन मोहे हो।।
घुंघरारे लाम हो, बेंदी भाले ठाम हो।। २ ।।
दोनों के चरनियाँ में सुघर सुरेखा हो।
सियाअनुज सोई जाने जेहि देखा हो।।
सीताराम नाम हो, सुबह हो या शाम हो।। ३ ।।

आरती १८

आरती करो रघुवर की, करो धनुधर की, जानकीवर की।।
रतन जटित सिंहासन साजे,
संग में सिय के राम विराजे,
रामलखन रिपुदमन भरत अरु हनुमत से अनुचर की।।
माथे मणि का मुकुट सँवारे,
आनन पै चानन शुभ धारे,
हिय पै हीरनहार,करे मुसुकनियाँ हिय बेखबर की।।
चरणकमल की शोभा न्यारी,
मनहु त्रिवेणी चरण मझारी,
गंगजमुन सम पादपीठ नख, तरुवा रेख जलचर की।।
जय जयकार करें नर नारी,
सियाअनुज आरती उतारी,
लिये हाथ मंगल जलझारी, चँवर छत्र मुरछर की।।

आरती १९

आरती रघुवरलाला की, साँवरिया नैन विशाला की।।
कमल कर धनुष बाण धारे,
सलोने नैना रतनारे,
सुछवि लखि कोटि काम हारे,
अलक की बलन, पलक की चलन, पीत पट हलन,
लटक सुन्दर वनमाला की,साँवरिया नैन विशाला की।।१।।
संग सिय शोभा की खानी,
विराजे जगतजननी रानी,
प्रेम भक्ति रस की दानी,
भरत से धीर, लखन रणधीर, प्रजा की भीर,
शत्रुहन रूप रसाला की ,साँवरिया नैन विशाला की ।।२।।
सदा तुम दीनन हितकारी,

अधम केवट शबरी तारी,
गीध की परमगति न्यारी,
सुरन को ईश, कौशलाधीश, रक्ष जगदीश,
शंभु सुहृदय सुखपाला की, साँवरिया नैन विशाला की।।३।।
चरण चापत अंजनी के लाल,
प्रेम रस बाँटत दीनदयाल,
बरस रही पुष्पन की जयमाल,
भगत भय हरण,सदा सुख करन, दीन है शरण,
जानकीनाथ कपाला की, साँवरिया नैन विशाला की।।४।।

आरती २०

करो सब आरती सुखदाई। विराजे सिय संग रघुराई।।
मुकुट मणि मस्तक पर राजे,
भाल पर चानन शुभ साजे,
देखि छबि कोटि काम लाजे,
सिया जू संग, स्वर्ण सा रंग, सोह वामांग,
चरण में मारुति लिपटाई। विराजे सिय संग...।।१।।
भरतजी छत्र सँवारे माथ,
व्यजन रिपुसूदन लीन्हे हाथ,
बंदिजन गावैं गुणगण गाथ,
नयन जलधार, करें जयकार, होयँ बलिहार,
डोलावें चँवर लखन भाई। विराजे सिय संग....।।२।।
लिये सखि कर में कंचन थार,
कपूरी बाती साजै चार,
करैं सब पुष्पन की बौछार,
बजे मुरचंग, शंख मिरदंग, झाल-ढप-चंग,
सियानुज लखि लखि हरषाई। विराजे सिय संग।।३।।

आरती २१

सखी आरती सियरघुनंदन की।।
माथे मणिमौर जापै मोतीलर सेहरा।
बिजली सी चमके छटा श्यामघन चेहरा।।
जन मन रंजन निरंजन के अंजन की।।१।।
मोतिन की माल गर हाथ में रुमलिया।
मंद मुस्कन लखि अलियाँ बेहलिया।।
कर धनुशर आम के कंगन की।।२।।
पियर उपरना औ पियरी पीताम्बर।
चारु चरन में सुभग महावर।।
कोटि कोटिक अनंग द्युति अंगन की।।३।।
कनकथार घत बाति जरा के।
आरती उतारे अलि बलि बलि जाके।।
सियाअनुज आश पदवंदन की।।४।।

आरती २२

आरती चारों पहुना की। लाड़िली चारों बहिना की।।
बिराजे सुभग शीश पर मौर,
मौर की मोतीलर वर छोर,
निरखि छबि लाजैं काम करोर,
रतन गलमाल,तिलक है भाल,हंस सी चाल,
जगत अस जोड़ी कहि ना की। लाड़िली.................।।
हृदय पर कौस्तुभमणि सोहे,
विप्र पद उर श्रीवत्स मोहे,
कपा भरि चितवन से जोहे,
प्रबल भुजदण्ड, हाथ कोदण्ड,प्रताप प्रचण्ड,
लसत करकंगन दहिना की।लाड़िली.....................।।
अंग में पीली पीताम्बर,

महावर शोभित है सुन्दर,
सुघर दोउ चरणन रेखावर,
अरुण से वरण, कमल से चरण, सियानुज शरण,
धन्य अगहन के महिना की।लाड़िली.....................।।

आरती २३

मिथिला में आये दुलहा चार, हे सखि आरती कीजै।।
चपल तुरंग असवार, हे सखि आरती कीजै।।
जुल्फें घुंघरारी कारी, मुख छबि अतिप्यारी,तापै मौर सँवारी।
सेहरा ललित झलकार, हे सखि.।।
धोती लगनोती सोहे, पियर उपरना, संग में कँाखासोती।
आमक कंगन कर धार, हे सखि.।।
चरण महावर, भल रेशमी पनहियाँ, लागे अतिसुखदैया।
देखन को दुनियाँ बेकरार,हे सखि.।।
गावें शुभ बैना, संग में मैयासुनैना, सखियाँ देइ दिठौना।
कर में सुधारे कंचनथार, हें सखि.।।
तन मन धन वारे,सब आरती उतारे, लखिलखि पहुना प्यारे।
सियनुज हिय बलिहार, हे सखि.।।

आरती २४

सखि हे आरती उतारू रधुनन्दन दुलहा के।।
हीरा के हार मौर लर मोती हे।
चपकन चारु बियहुती धोती हे।।
देखु चरण महावर करकंगन दुलहा के।।
नयन कजरवा अलक घुंघराली काली।
कनवाँ में कुण्डल सोहे ओठवा पै पान की लाली।।
चमके भाल पर लाल लाल चन्दन दुलहा के।।
मंद मुस्कान भौंह तिरछी कमान हे।
जाकी कोई उपमा न सकल जहान हे।।

कोटी काम छबि वारौं अंग अंगन दुलहा के।।
धन्य धन्य मिथिला के सुकत महान हे।
लाड़िली कपा से पवर्ली ऐसन मेहमान हे।।
अइसन बांधू नाहीं छूटे, गठबंधन दुलहा के।।

आरती २५

रंगीली आरती करु नीकी। नवलवर नौशे दुलहिनजीकी।।
पगतल ललित संयुक्त महावर, रंजित नख अवली की।।
बसन बसन्ती सुकटि लसन्ती, सारी मोल घनी की।।
मुख सुछवि की सींव बनी की, मुस्कनि वष्टि अमी की।।
मौर मौरी की छहर छोरी की, दामिनि द्युति करै फीकी।।
मोद अली की सरबस ही की, झाँकी सिय सियपी की।।

आरती २६

करु आरती अवध ललनवाँ की।
रघुनन्दन सिया के सजनवाँ की।।
चारु चरन जनु जमुन गंग सम।
नख मणि छटा सुगंग तरंगम्।।
सोहे शारद अरुन तलनवाँ की।।१।।
कटि किंकिन कटिसूत्र मनोहर।
पीताम्बर रवि बाल ज्योति हर।।
पग नुपुर जटित रतनवाँ की।।२।।
नाभि गंभीर त्रिवली युत मोहे।
उर श्रीवत्स विप्र पद सोहे।।
गलहार औ कर में कंगनवाँ की।।३।।
भाल तिलक सिर मौर विराजे।
कोटि मनोज देखि छबि लाजे।।
जावे बलि सियाअनुज पहुनवाँ की।।४।।

आरती २७

आरति अंजनिनंदन की,लाड़ले सियरघुनंदन की।।
केसरीसुवन अंजनीलाल,
जगत में प्रगट स्वयं महाकाल,
राम आज्ञा से जनप्रतिपाल,
स्वर्ण सा रंग,वज्र सा अंग,गदा है संग,
वीरता चहुँयुग वंदन की,लाड़ले................।।१।।
चरित प्रभु सुनिबे के रसिया,
हृदय श्रीराघव के बसिया,
रहे पल पल हिय में गसिया,
धाम में गेह,राम पद नेह,नयन में मेह,
दर्प दल असुर निकंदन की,लाड़ले.............।।२।।
रामसेवा में निशिदिन प्रीत,
दास राघव के भे बिन क्रीत,
चरित सब ग्रंथन में उद्धत,
जगत से हटे,चरण में डटे,नाम हरि रटे,
गती जग के स्वछंदन की,लाड़ले.............।।३।।
पवनसुत संतन के प्यारे,
सदा से भक्तन रखवारे,
सियानुज जीवन आधारे,
हेकरुणाकर,मिलें सियावर,पकड़ ले कर,
चरणरज मम सिर चंदन की,लाड़ले...........।।४।।

आरती २८

आरती करिये अंजना के वारे की, सिया के दुलारे की, राघव के प्यारे की।।
चारों युग में नाम तिहारा,जाइ लंक पल भर में जारा।
अजर अमर अस असुर संहारे की, सिया के दुलारे की, राघव के प्यारे की।।
राम नाम महिमा प्रगटाये, चीर हृदय लंकेश दिखाये।

चहुँदिशि जग में जयजयकारी की, सिया के दुलारे की, राघव के प्यारे की।।
रामकथा हनुमत को भावै,भक्तों की सब आश पुरावै।
संतजनों के एक सहारे की, सिया के दुलारे की, राघव के प्यारे की।।
सियाअनुज पर करुणा कीजे,जगत छुड़ाय शरण में लीजे।
जगतवंद्य हनुमत द्वारे की, सिया के दुलारे की, राघव के प्यारे की।।

आरती २९

आरती कीजे हनुमानलला की।दुष्टदलन रघुनाथ कला की।।
जाकेबल से गिरिवर काँपै। रोगदोष जाके निकट न झाँपै।।
अंजनिपुत्र महाबल दाई। संतन के प्रभु सदा सहाई।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुध लाये।।
लंका सी कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई।।
लंका जारि असुर संहारे। सियाराम के काज सँवारे।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि सजीवन प्राण उबारे।।
पैठि पाताल तोरि जम कारे। अहिरावण की भुजा उखारे।।
बाऐं भुजा असुर दल मारे। दहिने भुजा संतजन तारे।।
सुर नर मुनि आरती उतारे। जै जै जै हनुमान उचारे।।
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजनामाई।।
जो हनुमानजी की आरती गावै। बसि बैकुण्ठ परमपद पावै।।
लंका विध्वंस किये रधुराई। तुलसीदास स्वामी आरती गाई।।

आरती ३०

जय श्रीहनुमंता प्रभु जय श्रीहनुमंता।
सबमिलि आरती गावैं सुर नर मुनि संता।।
शंकरसुवन कहाये पवनपुत्र ख्याता।
केसरिनंदन जाने अरु अंजनिमाता।।
अजरअमर गुणनिधि कहि आशिषे सीता।
अष्ट सिध्दि के दाता भे राधव प्रीता।।

अंजनिनंदन वानर तनु में शिव आये।
सेवा करि के प्रभु की राम नाम गाये।।
पग पग पै कपिपति के हनुमत सुखदाये।
पीठ चढ़ा के अपने रघुवर को लाये।।
लंक प्रजारि हाँक से निशिचरकुल नाशा।
भे लंकेश कपा से रघुवर के दासा।।
सेवा प्रेम देखि के रघुवंशी हारे।
किये कनोड़े सबको भे सबके प्यारे।।
राम दरश से बढ़ कर सेवा अतिप्यारी।
गये संग सब अवधी रह गये उपकारी।।
राम कथा के रसिया सुनते औ गाते।
तुलसी से आज्ञा करि मानस लिखवाते।।
सियाअनुज तव शरणी अब अपना लीजै।
सीताराम चरण के दर्श करा दीजै।।

आरती ३१

श्रितकमला कुच मण्डल,धत कुण्डल हे।
कलित ललित वनमाल, जयजयदेव हरे।।
दिनमणि मण्डल मण्डन,भव खण्डन हे।
मुनिजन मानस हंस, जयजयदेव हरे।।
कालिय विषधर गंजन,जनरंजन हे।
यदुकुल नलिन दिनेश,जयजयदेव हरे।।
मधु मुर नरक विनाशन,गरुड़ासन हे।
सुरकुल केलि निदान,जयजयदेव हरे।।
अमल कमल दल लोचन,भवमोचन हे।
त्रिभुवनभुवन निधान,जयजयदेव हरे।।
जनकसुता कत भुषण,जित दूषण हे।
समर शमित दसकंठ,जयजयदेव हरे।।

अभिनव जलधर सुन्दर,धत मन्दर हे।
श्रीमुख चन्द चकोर,जयजयदेव हरे।।
तव चरणे प्रणतावयमिति, भावय हे।
कुरु कुशलं प्रणतेषु, जयजयदेव हरे।।
श्रीजयदेव कवेरिदं, कुरुतेमुदम्।
मंगलमुज्जवलगीतं, जयजयदेव हरे।।

आरती ३२

आरती कष्ण कन्हैया की, सहित बलदाऊ भैया की।।
संग में ग्वाल बाल बहुरंग,
हृदय में छलकत प्रेम तरंग,
बाल क्रीड़ा हित अमित उमंग,
फेंट कटि कसे, पीत पट लसे, सुरति हिय बसे,
नन्द यशुदा के छैया की, सहित बलदाऊ भैया की।।१।।
भोज अरु तोष सखा श्रीदाम,
सुबल मधुमंगल और वसुदाम,
रसाल, विशाल, सुललित ललाम,
रहे सब खेल , अंश भुज मेल, छबीले छैल
रीति गति विधि लरिकैया की, सहित बलदाऊ भैया की।।२।।
बना के अपने अपने टोल,
रहे मस्ती में सबरे डोल,
बोलते भाँति भाँति के बोल,
बीच बलराम, सुछवि अभिराम, त्रिभंगी श्याम,
अधरधर वेणु बजैया की, सहित बलदाऊ भैया की।।३।।
चर रही गायें विपिन मझार,
मगन सब प्रभुहिं निहार निहार,
मुरलिया करती रस संचार,
निरखि बजचन्द, सुआनन्दकन्द, पडे सुरमन्द,

मान मन्मथ मथवैया की। सहित बलदाऊ भैया की।।४।।
नेहनिधि नारायण के दास,
सुमन बरसाय करै अरदास,
रखहु निज चरणकमल के पास,
नाम में रमें, धाम में जमें, चरण में नमें,
प्रणत प्रतिपाल करैया की, सहित बलदाऊ भैया की।।५।।

आरती ३३

दिव्य दंपत्ति की आरती उतारो हे अली।
राजै नन्द जू के लाल, वषभान की लली।।
पद-नख-मणि चंद्रिका की उज्जवल प्रभा,
नील-पीत-कटि पट रहे मन को लुभा,
कटि कौधंनी की शोभा अति लगति भली।।
नाभि रुचिर गम्भीर मन भँवर परे,
उर कौस्तुभ श्री वत्स भगु पद उभरे,
वनमाल उर राजै कम्बु कण्ठ त्रिवली।।
दिव्य कान्ति गौर श्याम मुख चन्द्र की छटा,
घुंघराली अलकावली सुजलद घटा,
द्युति कुण्डल दशन सो चपल बिजली।।
शीश चन्द्रिका मुकुट त्रिभुवन धनी के,
अंग अंग दिव्य भूषण कनक मनी के,
सोहे श्यामा कर कंज श्याम कर मुरली।।
चितवनि मुसुकनि प्रेम रस बरसे,
हिय हरषे नारायण चरण परसे,
जय जय कहि बरसे सुमन अंजली।।

आरती ३४

आरती बालकष्ण की कीजै।
अपनो जनम सुफल करि लीजै।।

श्रीयशुदा को परमदुलारो,
बाबा की आँखियन को तारो,
गोपिन के प्राणन को प्यारो,
इन पै प्राण निछावर कीजै।।

बलदाऊ को छोटो भैया,
कनुआ कहि कहि बोले मैया,
परम मुदित मन लेत बलैया,
यह छबि नयनन में भरि लीजै।।

श्रीराधावर सुघर कन्हैया,
बजजन को नवनीत खवैया,
देखत ही मन नयन चुरैया,
अपनों सरवस इनको दीजै।।

तोतरी बोलन मधुर सुहावे,
सखन मध्य खेलत सुख पावे,
सोइ सुकति जो इनको ध्यावे,
अब इनकूँ अपनो करि लीजै।।

आरती ३५

जय कान्हा काल़ा, प्रभु नटवर नंदलाला।
मीठी मोरलीवाल़ा, गोपीना प्यारा।।
कामणगारा कान्ह, कामण थइ दीन्हों।
माखन चोरी मोहन, चित चोरी कीन्हों।।
नंद यशोदा घेर, वैकुण्ठ उतारी।
कालिय मर्दन कीन्हों, गायों ने चारी।।

गुण तणो तुझ पार, कहे नहिं आवे।
नेती वेद पुकारे, पुनित शू गावे।।

आरती ३६

बाँके बिहारी तेरी आरती गाऊँ।।
मोर मुकुट तेरे शीश पै सोहे,
प्यारी वंशी तेरी मुनीमन मोहे,
देखि छबि बलिहारी जाऊँ।।

चरणों से निकली गंगा प्यारी,
जिसने सारी दुनिया तारी,
उन चरणों में मैं तो शीश झुकाऊँ।।

व्यासदास के नाथ आप हैं,
सुख दुख जीवन प्यारे साथ आप हैं,
युगल छबि को अपने हिय में बसाऊँ।।

आरती ३७

आरती मेरे प्यारे की।लाड़ले नंददुलारे की।।
सखन का कन्नू प्राणाधार,
वही करता है सच्चा प्यार,
भक्त को बना हृदय का हार,
लगा हिय से, बहुत हरषे, नयन बरषे,
पतित अधमों के सहारे की। लाड़ले नंददुलारे की।।
करे घर घर माखन चोरी,
सखिन संग करते बरजोरी,
शिकायत करती बजगोरी,
संभालो मात,करे उत्पात, हमें नहिं भात,
धूम नित गैल गरारे की। लाड़ले नंददुलारे की।।
जगत में ख्यात बिरजहोरी,
बनावे छोरा से छोरी,
बिगाड़े हुलिया रंग बारी,
बजा के ढोल,खोलती पोल, लिया है मोल,

भये कस कान्हा कारे की। लाड़ले नंददुलारे की।।
किये बजरज का आस्वादन,
चरावे गैया जा वन वन,
मनाये राधा छूई चरन,
सियानुज आस,बने बजदास,रहे नित पास,
हिये छबि गिरिवरधारे की। लाड़ले नंददुलारे की।।

आरती ३८

सब आरती उतारो मेरे लालन की।।
मातुयशोदा करत आरती, गिरिधर लाल गोपालन की।।
कंस निकंदन जय जग वंदन, कृष्ण कृपालु दयालन की। ।
ब्रज जन मिलि सब मंगल गावत,निरखत छबि नंदलालन की।।
मोरमुकुट पीताम्बर सोहे,मुख पर लाली गुलालन की।।
मोतिन माल की और छटा अरु, ऊपर तुलसी मालन की।।
कृष्णदास बलिहारी छबि पै, कृष्णकन्हैयालालन की।।

आरती ३९

सब आरती उतारो, मेरे प्राणधन की।
प्राणधन की, मेरे श्यामघन की।।
कर कंचन के थाल, बाती मणिमय ज्वाल।
लखि नयन निहाल, सब बजजन की।।
नंद यशोदा के लाल, मेरे मदनगोपाल।
संग चहुँ दिशि ग्वाल, वेणुवादन की।।
तेरी चोरी भी कमाल,नहिं जग में मिशाल।
किये कितने निहाल, करि चोरी मन की।।
मेरे सुन्दरश्याम, वारूँ कोटी कोटी काम।
तू तो राधा का गुलाम, सेवा चरनन की।।
दो दो बापन के कान्ह, तेरे नखड़े महान।
नहिं सके कोई जान, हर विधि सनकी।।

तेरी मंद मंद हास, लिया सियानुज फाँस।
रख चरणन के पास, गली मधुवन की।।

आरती ४०

आरती कुंजबहारी की,श्री गिरिधर कष्णमुरारी की।।
गले में वैजन्तीमाला,
बजावै मुरली मधुर बाला,
श्रवण में कुण्डल झलकाला,
नन्द के नंद, श्री आनंदकंद, मोहन बजचन्द,
राधिकारमण बिहारी की, श्री गिरिधर..............।।
गगन सम अंगकान्ति काली,
राधिका चमक रही आली,
लतन में ठाढ़े वनमाली,
भ्रमरसी अलक, कस्तुरी तिलक,चन्द्र सी झलक,
ललित छबि श्यामा प्यारी की,श्री गिरिधर...........।।
कनकमय मोर मुकुट विलसे,
देवता दर्शन को तरसे,
गगन से सुमन बहुत बरसे,
बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालिनी संग,
अतुल रति गोपकुमारी की, श्री गिरिधर............।।
जहाँ से प्रकट भई गंगा,
कलुष कलि हारिणी श्रीगंगा,
स्मरण से होत मोह भंगा,
बसी शिव शीश, जटा के बीच,हरे अघ कीच,
चरण छबि श्री बनवरी की, श्री गिरिधर............।।
चमकती उज्जवल तट रेनु,
बाज रही वंशीवट वेनू,
चहूँ दिशि गोप ग्वाल धेनू,

हँसत मदुमंद, चांदनी चंद, कटत भव फंद,
टेर सुन दीन भिखारी की, श्री गिरिधर.............।।

आरती ४१

अधर धर मुरली बजैया की, आरती कष्णकन्हैया की।।
कष्ण तुम मथुरा जनम लियो, नंदघर मंगलाचार कियो।
यशोदा गोद खिलैया की, आरती......................।।
कष्ण तुम यशुदा के छैया, श्याम बलदाऊ के भैया।
वन वन गाय चरैया की, आरती......................।।
कष्ण तुम कंसासुर मारे, श्याम तुम भूमि भार टारे।
कालिया नाग नथैया की, आरती.....................।।
कष्ण तुम अर्जुन के प्यारे, श्याम तुम भक्तन रखवारे।
वन्दावन रास रचैया की, आरती.....................।।
आरती गाते कष्णानंद, मन में होता अति आनन्द।
विनय है लाज रखैया की, आरती...................।।

आरती ४२

गावो सखी आरती पिया और प्यारी की,
भानुदुलारी की, हो गिरिवरधारी की।।
कंचन थार कपूर सजाओ, धूप दीप और चँवर डुलावो।
बलि बलि जाऊँ तोपे रासबिहारी की, भानुदुलारी....।।
मोरमुकुट सुंदर वनमाला, मुरली अधरधर धारे नंदलाला।
नयन लखो छबि बाँकेबिहारी की, भानुदुलारी.......।।
शीश चंद्रिका की छबिन्यारी, नीलवरण सोहे तन सारी।
ललितकिशोरी राधे बरसानेवारी की, भानुदुलारी....।।
ठाढ़े सिंहासन दे गलबाँही, रसिक जनन हिय बसत सदा ही।
बज जीवन धन रमणबिहारी की, भानुदुलारी...... ।।

आरती ४३

राधावर बजधर गिरिधर की।
गावो सखी आरती युगलवर की।।
हिय थार धार शुद्ध प्रेम को कपूर।
भाव भवन बीच जिय ज्योती रही पूर।
पूरण प्रकाश गति मति पर की।।१।।
केलिबेलि फूल रही वन्दावन बीच।
अनुदिन सेइये रसिक रस सींच।
जहां मति भूली विधि शेष हर की।।२।।
नन्दसुत कीरति जगत वन्दनी।
भानुकुल भूषण वषभाननन्दिनी।
रास रस रसिक प्रियाजू हरि की।।३।।
प्रेम कुन्ज पाहुने पधारे आज री।
लोचन सुफल सिद्ध भये काज री।
पाई निधि रंकनि कुबेर घर की ।। ४।।
दिये गल बहियाँ विराजें दिव्य धाम।
रास रस रसिया रसिक वर श्याम।
मंद मंद बाजती मुरलिया कर की।। ५।।

आरती ४४

आरती करत बज नारी, ले कंचन थारी।।
भावना भक्ति की ज्योति, अनमोल प्रेम के मोती।
रस बूँदन सों भरि झारि, अतिहि सुकुमारी।।
घनश्याम नन्द के लाला, पहिरे पट पीत रसाला।
संग सोहे भानुदुलारी, राधिका प्यारी।।
अनुपम छबि मोर मुकुट की, चंचल चितवन नटवर की।
चन्द्रिका चमक रही न्यारी, नीलाम्बर सारी।।
सिंहासन दोऊ बिराजे,लखि कोट चन्द्र छबि लाजे।

ये रसिकन की फुलवारी, जगत लगे खारी।।
चिरजीवो अविचल जोरी, मोहन बषभानुकिशोरी।
बज जीवन कुंजबिहारी, पै जाऊँ बलिहारी।।

आरती ४५

सखि आरती करिये युगलवर की।
युगलवर की हो प्यारे मनहर की।।
जोड़ी सुन्दर श्यामल गौरी।
नंदनॅदन वषभानु किशोरी।।
अलिगण चातक हित रसधर की।।
दोऊ कर से करे इशारा।
तजि असार जग होउ हमारा।।
भव तारण हित करुणा सर की।।
आरति आरत दूर भगावे।
युगल चरण में प्रेम जगावे।।
सियनुज हिय रस अवतर की।।

आरती ४६

राधा संग मोहन हमारे, हिलमिल सखि आरती उतारे।।
हाथों में सोने की थारी, मणिमय दीपक सँवारी।
लखि लखि सखि जीवन न्यौछारे...।।१।।
मोहन के कर की मुरलिया,बज को बनावे बावरिया।
शुकमुनि समाधी बिसारे...।।२।।
राधा की बाँकी अदा है, मोहन भी जापे फिदा है।
पल पल मगन हो निहारे...।।३।।
उपमा न त्रिभुवन में थोरी, नित्य किशोर किशोरी।
हम सब इन्हीं को पुकारें...।।४।।
पिया श्याम राधा गौरी, घन दामिनि की जोरी।
सियाअनुज हिय बसा रे...।।५।।

आरती ४७

मोहन मदन गोपाल की, सखि आरती कीजे।।
नन्द यशोदा के लाल की, सखि आरती कीजे।।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, साँवरी सूरत मन को मोहे,
कर मुरली गर माल की, सखि आरती कीजे।।
नन्दलाल संग राधागोरी, सारे जग में अनुपम जोरी,
शोभा बनी विशाल की, सखि आरती कीजे।।
कंचन थाल कपूर की बाती, बज की ग्वालिन आरती गाती,
भक्तन के प्रतिपाल की, सखि आरती कीजे।।
जो यह आरती प्रेम से गावे, युगल चरन में आश्रय पावे।
मिले कपा नंदलाल की, सखि आरती कीजे।।

आरती ४८

श्यामा तेरी आरती, कन्हैया तेरी आरती,
सारा संसार, करेगा कर जोड़ जोड़ के।।
मोर मुकुट तेरे शीश पै सोहे,
प्यारी वंशी मुनि मन मोहे, गर फूलन के हार।।
मैं हूँ दीनन दुखिया भारी,
आया हूँ प्रभु शरण तिहारी, रखियो लाज हमार।।
प्रेम सहित जो आरती गावे,
राधा माधव के मन भावे, आये शरण तुम्हार।।

आरती ४६

आरती राधारानी की। सकल जग की महारानी की।।
चन्द्रिका सिर पर है भारी,गौर अंग नीलाम्बर सारी,
नासिका नथिया झलकारी,बजेश्वरी श्रीगुणखानी की।।
अधर अरुणारे रसभीने,मधुर मुसुकन पिय वश कीन्हे,
दसन दाड़िम की छबि छीने,श्याम हिय रस बरसानी की।।

रेशमी घुंघरारी अलकें,कमल सी कजरारी पलकें,
हार उर पर सुन्दर झलके,मनोहर मधुरी वानी की।।
चरण रज जगपावन करनी,शोक भ्रम दुख माया हरनी,
मिटावे रसिकन जिय जरनी,सियानुज यहि मनमानी की।।

आरती ५०

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट, छिन में दूर करे।।
जो ध्यावे फल पावे, दुख विनसे मन का।
सुख संपति घर आवे,कष्ट मिटे तन का।।
मात पिता तुम मेरे,शरण गहुँ मैं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आश करूँ जिसकी।।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।।
तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता।
मैं मुरख खल कामी, कपा करो भर्ता।।
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति।।
दीनबन्धु दुखहर्ता, तुम रक्षक मेरे।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे।।
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा।।
तन मन धन सुख संपति,सबकुछ है तेरा।
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा।।
पूरणब्रह्म की आरती, जो कोइ नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी,सुख संपति पावे।।

आरती ५१

आरती प्रीतम प्यारी की,बनवारी श्रीनथवारी की।।

दुहन सिर कनक मुकुट झलके,
दुहन श्रुत कुण्डल हल हलके,
दुहन दग प्रेम सुधा छलके,
चसीले वैन, रसीले नैन, गसीले सैन,
दुहन नैनन मनहारी की ।। आरती ....
दुहन दग चितवन पर वारी,
दुहन लट लटकन छबि न्यारी,
दुहन भौं मटकन अति प्यारी,
रसन मुख पान, हसन मुस्कान, दसन दमकान,
दुहन बेसर छबि न्यारी की ।। आरती ....
एक उर पीताम्बर फहरे,
एक उर नीलाम्बर लहरे,
दुहन उर लर मोतिन छहरे,
कंकणम खनक, किंकिणी भनक, नूपुर पग खनक,
दुहन खन सुन धुनि प्यारी की।। आरती...............
एक सिर मोर मुकुट राजे,
एक सिर चुनरी छबि छाजे,
दुहन सिर तिरछे भल भ्राजे,
संग बज बाल,लाड़िली लाल, बाँह गल डाल
कपालु दुह दग चारी की ।। आरती.................

आरती ५२

भजो राधे कष्ण, राधे कष्ण, राधे गोविन्द ।।
केशवजी कल्याण गिरिधरन छबीलेलाल।
मदन मोहन श्रीवन्दावनचन्द ।। हरि हरि ।।
देवकी के छैया बलभद्र जू के भैया लाल।
जाको मुख देखे ते कटत यम फन्द ।। हरि-हरि।।
चतुर्भुज चक्रपाणि देवकीनन्दन देव।

नन्द को नन्दन स्वामी असुर निकन्द।। हरि-हरि ।।
बजपति बजराज सुरन के सारे काज।
मुरली धरै तो नैना देखे ते आनन्द।। हरि-हरि।।
यादवपति यादवराय संतन सदा सहाय।
याही धुनि गावैं स्वामी परमानन्द ।। हरि-हरि।।

आरती ५३

आरती शंकरदानी की। मातु गिरिजा महारानी की।।
गले में पड़ी मुण्डमाला,
कसे कटि केहरि की छाला,
प्रेम में रहते मतवाला
भस्म सोहे अंग, जटा में गंग, जनेऊ भुजंग,
दिगम्बर हरविज्ञानी की। मातु................ ।।१।।
यही कहलाते जगद्‌गुरू,
बजाते श्रृंगी और डमरू,
दास है वीरभद्र भैरू,
भाल नव चन्द, हँसन मुखमन्द, हरै भवफन्द
हरी हर भक्त अमानी की। मातु.................. ।।२।।
कहाते काशी के वासी,
सदाशिव भोले अविनाशी,
विपति भंजन शिव सुखराशी,
नाग का हार, भंग आहार, मदन मदमार,
सुधारक काम कहानी की। मातु..................।।३।।
आरती आरत जन गावैं,
भरोसा एक यही आवै,
कपा तेरी ही से पावै,
हृदय में शक्ति,विमल अनुरक्ति,राम की भक्ति,
नारायण नामरु नामी की। मातु..................।।४।।

आरती ५४

ॐ जय गंगाधर हर जय गिरिजाधीशा।
त्वं मां पालय नित्यं कपया जगदीशा।। टेक।।
कैलासे गिरिशिखरे कल्पद्रुमविपिने।
गुंजति मधुकर पुंजे कुञ्जवने गहने।।१।।
कोकिलकूजित खेलत हंसावन ललिता।
रचयति कलाकलापं नत्यति मुदसहिता।।२।।
तस्मिँल्ललित सुदेशे शाला मणिरचिता।
तन्मध्ये हरनिकटे गौरी मुदसहिता।।३।।
क्रीड़ा रचयति भूषारंजित निजमीशम्।
इन्द्रादिक सुरसेवित नामयते शीशम्।। ४।।
बिबुधबधू बहु नत्यत हृदये मुदसहिता।
किन्नर गायन कुरुते सप्त स्वर सहिता।।५।।
धिनकत थै थै धिनकत मदंग वादयते।
क्वण क्वण ललिता वेणुं मधुरं नाटयते।।६।।
रुण रुण चरणे रचयति नूपुरमुज्जवलिता।
चक्रावर्ते भ्रमयति कुरुते तां धिक् ताम्।।७।।
तां तां लुप चुप तां तां डमरू वादयते।
अंगुष्ठांगुलिनादं लासकतां कुरुते।।८।।
कर्पूरद्युतिगौरं पंचाननसहितम्।
त्रिनयनशशिधरमौलिं विषधरकण्ठयुतम्।।९।।
सुन्दरजटाकलापं पावकयुतभालम्।
डमरूत्रिशूलपिनाकं करधतनकपालम्।।१०।।
मुण्डै रचयति माला पन्नगमुपवीतम्।
वामविभागे गिरिजारूपं अतिललितम्।।११।।
सुन्दरसकलशरीरे कतभस्माभरणम्।
इति वषभध्वजरूपं तापत्रयहरणम्।।१२।।

शंखनिनादं कत्वा झल्लरि नादयते।
नीराजयते ब्रह्मा वेदऋचां पठते।।१३।।
अतिमदुचरणसरोजं हृत्कमले धत्वा।
अविलोकयति महेशं ईशं अभिनत्वा।।१४।।
ध्यानं आरति समये हृदये अति कत्वा।
रामस्त्रिजटानाथं ईशं अभिनत्वा।।१५।।
संगतिमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरुते।
शिवसायुज्यं गच्छति भक्त्या यः श्रणुते।।१६।।

आरती ५५

ॐ जयशिवओंकारा,प्रभु जयशिवओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धांगी धारा।।
एकानन चतुरानन, पंचानन राजे।
हंसासन गरुड़ासन, वषभाहन साजे।।
दुइभुज चारचर्तुभुज, दसभुज से सोहे।
तीनों रूप निरखता, त्रिभुवन मन मोहे।।
अक्षमाला वनमाला, रुण्डमाला धारी।
चंदन मगमद चंदा, भाले शुभकारी।।
श्वेताम्बर पीताम्बर, बाघम्बर अंगे।
सनकादिक प्रभुतादिक, भूतादिक संगे।।
करमध्येक कमंडल, चक्र त्रिशूलधर्ता।
सुखकर्ता दुखहर्ता, जगपालनकर्ता।।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये, ये तीनों एका।।
त्रिगुणास्वामी की आरती, जो कोइ नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख संपति पावे।।

आरती ५६

आरती करो हर हर की, करो नटवर की, भोले शंकर की।

सिर पर शशि का मुकुट सँवारे,
तारों की पायल झन्कारे,
धरती अम्बर डोले ताण्डव, लीला से नटवर की।।
फणि का हार पहनने वाले,
शंभु हैं जग के रखवाले,
सकलचराचर डगमगडोले,अंगुली पर विषधर की।।
महादेव जय जय शिवशंकर,
जय गंगाधर जय डमरूधर,
हे देवों के देव मिटाओ, तुम विपदा घर घर की।।

आरती ५७

करु आरती परम विशाल, आज गौरीशंकर की।
लिय कर कंचन के थाल, आज गौरीशंकर की।।
शीश जटा का मुकुट निराला, वा पै चंदा सोहे आला।
लखु कंठ गरल-विकराल, आज गौरी शंकर की।।
कर त्रिशूल अरु डमरू बाजे, तीन नयन तिरपुंड विराजे।
तन विषधर का है जाल, आज गौरीशंकर की।।
करुणा के अवतार हैं स्वामी, सियाअनुज प्रभु अंतर्यामी।
ये सबको करें निहाल, आज गौरीशंकर की।।

आरती ५८

आरती श्रीशिवशंकर की,मातु श्रीगिरिजा के वर की।
सदाशिव काशी के वासी,
कपाली ब्याली अविनाशी,
अघोरी मंगल सुखराशी,
जटा मे गंग, उमा अरधंग, पिवत नित भंग,
विभूति गात दिगम्बर की। मातु..................।।१।।
युगल सुत सूरज चान्दन से,

षड़ानन और गजानन से,
शिष्य इक अहै दशानन से,
सोह शशि भाल,त्रिपुण्ड विशाल,नाम महाकाल,
ललित छबि श्रीविश्वम्भर की।.................।।२।।
सुघर पंकज से लोचन तीन,
अहर्निश रामनाम लयलीन,
शरण में पडा़ सियानुज दीन,
नाथ अवढ़र,मेरे गुरुवर, कपा अब कर,
पगे सियवर में मति कर की।..................।।३।।

आरती ५९

यज्ञ वराह की आरती कीजे।।
अद्भुत रूप तिहारो प्यारे, प्रगटे अजहि नासिका द्वारे।
परम क्रोध दोऊ कर मीजे।। यज्ञ वराह.............।।
दसनअधर पर धरणी धारे, हिरण्याक्ष को तुरत संहारे।
हरषे सुर जयकार करीजे।। यज्ञ वराह..............।।
स्तुति करते सुरमुनि ज्ञानी, भये प्रसन्न सुदर्शनपानी।
हरि के करुणारस में भीजे। यज्ञ वराह.............।।
तव चरित्र जो कहते सुनते, अनुमोदन करते और गुनते।
सियाअनुज प्रभु शरण में लीजे।। यज्ञ वराह.........।।

आरती ६०

आरती कीजे कपिलहरि की।।
जग में कपिलरूप धरि आये,सांख्यशास्त्र आचार्य कहाये,
कर्दम देवहूति हरषाये,मात पिता पै करुणा ढरि की।।
ज्ञान कर्म भक्ति की बातें,करि विस्तार बताये माँ ते,
तोड़े भवबंधन के नाते, आत्मयोग उद्घाटित करि की।।
माँ को करके भजन सहारे,चलके आये सिंधु किनारे,
नेत्र उघारि सगरसुत जारे,अजहु सियानुज तपरत धरि की।।

आरती ६१

आरती कपिलनारायण की,भागवत जग तारायण की।।
किये तप अज आज्ञा कर्दम,
ध्यान में डूब रहे हरदम,
सहस दश वर्ष लगे एकदम,
प्रगट भगवान, दिये वरदान, होय संतान,
सष्टिविस्तार करायण की,भागवत..................।।१।।
आप सम पुत्र सतत् हम जोइ,
करूँ तब आज्ञा पालन सोइ,
नहीं तो जो होनी सो होइ,
नहीं जग आस,एक विश्वास,रहो तुम पास,
प्रतिज्ञा भक्ति परायण की,भागवत....................।।२।।
द्रवित भे सुनिके करुणासिंधु,
नेत्र से प्रगटी अश्रुबिन्दु,
संत से बोले आननइन्दु,
जन्म लूँ आय, पुत्र कहलाय, देवहुति माय,
बिन्दुसर अवतारायण की,भागवत...................।।३।।
प्रगट भे जब मधुसूदन लाल,
निरखि भे माता पिता निहाल,
करे आरती लिये कर थाल,
स्वयंभू इति, करे अस्तुति, भव्य प्रस्तुति,
सियानुज ताप जरायण की,भागवत................।।४।।

आरती ६२

श्रीनरसिंह सरकार की, सब आरती कीजे।।
प्रहलादपति के प्यार की, सब बलि बलि लीजे।।
दया प्रेम करुणा के स्वामी,घट घटवासी अन्तर्यामी।
भक्त गिरा साँची करन, खंभा से निपजे।।

धर्मद्रोहि हिरणाकुश मारे, भक्तबछल प्रहलाद उबारे।
करो भजन प्रहलाद वचन,गुनि हृदय पतीजे।।
क्रोध देखि लक्ष्मी घबड़ाई, भागी हरि के पास न आई।
किये प्रसन्न प्रहलाद, भक्ति सत्संग वर दीजे।।
प्रगटे खंभ ते सबके आगे, तब ते पाहन पूजन लागे।
भक्त और भगवान चरण में सियानुज जीजे।।

आरती ६३

आरती कीजै नरहरि की,भक्त प्रहलाद हृदय धरि की।।
रह्यो जब कनककसिपु ललकार,
प्रगट भे स्वामी खंभा फार,
रूप प्रभु श्रीनरहरि को धार,
भत्य की गिरा सत्य कर की, भक्त.................।।१।।
दुष्ट जब कियो धर्म को जीर्ण,
किये प्रभु नख से उदर विदीर्ण,
हुए वर अज के सब उत्तीर्ण,
नाथ लखि मात लक्ष्मी डरि की, भक्त ....।।२।।
भरे जल नयन निरखि सुकुमार,
गोद बैठाइ करें बहु प्यार,
भये नरहरि पुनि पुनि बलिहार,
क्षमा मांगे विलंब कर की, भक्त.................।।३।।
आरती करते सब नर नार,
सियानुज करे पुष्प बौछार,
करें सुर प्रभु की जय जयकार,
भक्त भगवत के पग परि की, भक्त...................।।४।।

आरती ६४

आरती कीजे श्रीवामन की। विप्ररूप प्रभु मनभावन की।।
कश्यप अदिति के आंगन में,भादवशुक्ल द्वादसी जनमें।

मध्यदिवस अभिजित मूहुर्तन में,आशा पूरण भई सुरनकी।।
भई जनेऊ सुर अनुरागे, वामन चले छलन बलि लागे।
ठाढ़े भय से गंगा आगे, जोहत बाट पार जावन की।।
बलि की यज्ञशाल में आये, रोम रोम बलि के हर्षाये।
करि पूजा आसन बैठाये, कारन कहो विप्र आवन की।।
बलिको सुतलसुलोक पठाये,सियाअनुज शुभआरती गाये।
वामनचरण की भक्ति पाये,शरण पड़े हम रिपुरावन की।।

आरती ६५

आरती कीजै बावन की,अदितीसुत कश्यप लालन की।।
किये तप पश्नि सुतपा रूप,
चहैं जस पुत्र तुम्हें जगभूप,
हमे यह आशिष देहु अनूप,
तुम्हें ले गोद,हिये भरि मोद, यही अनुरोध,
भरे त्रीवाचा आवन की,अदितीसुत....................।।१।।।।
प्रगट भे सिद्धाश्रम रसरास,
गंगतट कश्यप अदिति वास,
भाद्रपद शुक्ल द्वादशी खास,
श्याम है वर्ण, नयन आकर्ण,नलिन से पर्ण,
सुछबि उपेन्द्र के आनन की,अदितसुत...............।।२।।
प्रथम थे बावन अंगुल गात,
भये जग त्रीविक्रम विख्यात,
बन गये शचिपति के लघुभ्रात,
किये सुरकाज, दिलाये राज,तजे सब लाज,
घड़ी सुरसरी प्रगटावन की, अदितिसुत..............।।३।।
करे सब आरती भक्तसमाज,
तेरे चरणों में सबकी लाज,
बनावे सबके बिगड़े काज,

करे सुमिरण,हरी के चरण,सियानुज शरण,
चरित सब श्रवण सुगावन की,अदितिसुत...........।।४।।

आरती ६६

श्रीमधुसूदन की आरती मिल कीजै।।
श्यामवरण मनहरण मनोहर,
छटा छबीली लाल की मन खींचे।।
शंख चक्र अरु गदा पद्म लै,
आयुध दिव्य अनूप हाथ धर लीजे।।
करत मनोरथ पूरे जन के,
जो चरणन चित लावते हिय भीजे।।
श्री मधुसूदन दर्शन करके,
वास बैकुण्ठ में पाइके सुख जीजे।।
आया सियाअनुज चरणन में,
भक्तिदान करि झोली को भर दीजे।।

आरती ६७

आरती भुवन भास्कर की। भक्त हिय पूर्ण आसकर की।
सूर्य तुम प्रगट धर्म के रूप,
प्रगट तव वंश राम जग भूप,
आलौकिक जग में कान्ति अनूप,
जयति जय तमविनाशकर की।।१।।
होत जब प्रगट किरणमाली,
विकासे पंकज की लाली,
किये सब सुर वैभवशाली,
सारथी अरुण खासकर की।।२।।
सतत् तुम करते रहत प्रकाश,
रुकें नहिं पल भर भी आकाश,
भरे भक्तन के हिय उल्लास,

उलूकन मन उदास कर की।।३।।

जगतपति ज्ञान हमें देवें,
विपति सब जग की हर लेवें,
सतत् हम तेरे पद सेवें,
आस सियअनुजदास कर की।।४।।

आरती ६८

आरती कीजे गौमाता की।संतन की आश्रयदाता की।।
गाय विश्व की मातु कहाती,
जीवन भर पय पान कराती,
शक्ति- तेज-बल- बुद्धि बढ़ाती,
चहुँ श्रुति जाको जस गाता की।।

गौ सेवा गोविन्द को भावे,
ग्वालन संग वन गाय चरावे,
घर घर से नवनीत चुरावे,
गौ सेवा करि हरषाता की।।

सियाअनुज मन इच्छित काजे,
सेवक हो राजे महाराजे,
करते सेवा है निर्लाजे,
पल पल अमत बरसाता की।।

आरती ६९

आरति कीजे आचारज की।
विमल-विवेक प्रदायनि रज की।।

ग्रंथों से जनहित की चुनते,
पहले अपने में ही गुनते,
फिर कहते उनसे जो सुनते,
हृदय प्रकाशक लख सूरज की।।

जीवों का करने कल्याणा,
आचारज है कपानिधाना,
युग युग में प्रगटे रसखाना,
गुरु शंकर गुरु हरि गुरु अज की।।

बोले हरि जो मेरी मानो,
मम स्वरूप आचारज जानो,
गुरु वाणी जस वेद प्रमानों,
जग में प्रगटे धर्म ध्वज की।।

मोह विनाशक वाणी जिनकी,
प्रेम प्रकाशक झाँकी तिनकी,
हृदय हुलासक छबि जन जन की,
सियनुज जस राघव आरज की।।

आरती ७०

आरती श्रीसर्वेश्वर की। जगद्‌गुरु श्रीरसिकेश्वर की।।
इष्ट श्रीसर्वेश्वर सुखदेव,
रहे श्रीसनकादि के सेव्य,
दिये श्रीहंस कपाकरि भेव,
कपाकी खान,निम्बार्क महान,दिये दढ़ ज्ञान,
उपासना श्रीमुरलीधर की। जगद्‌गुरु................।।१।।
सदा से आश्रय चारों वेद,
है जिनका दर्शन भेदाभेद,
मिटावें जीवमात्र का खेद,
हरे जग वक्र,सुदर्शन चक्र, नमत जेहि शक्र,
जगत निम्बार्क प्रगटकर की। जगद्‌गुरु...........।।२।।
जगद्‌गुरु श्रीश्रीजी महाराज,
कपाकरि दर्शन दीन्हें आज,
दर्श से पूर्ण भये मनकाज,

भव्य दर्शन, मंद मुस्कन, सौम्य चितवन,
सियानुज के सद्‌गुरुवर की। जगद्‌गुरु............।।३।।

आरती ७१

आरती करो तुलसी की, मातु हुलसी की। राम कुल सी की।।
राजापुर की धरा धन्य है, जन्म जन्म का जगा पुन्य है।
आत्मारामदुबे बड़भागी अरु माता हुलसी की।।
रामचरित श्रीतुलसी गाये, द्वादस ग्रंथ धरा प्रगटाये।
हनुमत भे सहाय हरपल, कलिपंक गई धुलसी की।।
अद्‌भुत मानस की रस रचना, ज्ञान भक्ति असंग वरवचना।
वाणी सुनि के जनमानस की, गई आँख खुलसी की।।
सियाराम सब जगत लखाये, करि प्रभुप्रेम रामपद पाये।
सियाअनुज शुभ आरती गाये,भवसागर पुलसी की।।

आरती ७२

नमो नमो तुलसी महारानी।।
जाके दरश परस अघ नाशै, महिमा वेद पुराण बखानी।।
शाखा पत्र मंजरी कोमल, श्रीपति चरण कमल लपटानी।।
तुम तुलसी पूरण तप कीन्हों, शालिग्राम महा पटरानी।।
राम वाम कर दोना लीन्हें, पूजन चले महागुरु ज्ञानी।।
धूप दीप नैवेद्य आरती, पुष्पन की बरसा बरसानी।।
छप्पन भोग छतीसों व्यंजन, बिन तुलसी हरि एक न मानी।।
शिव सनकादि और ब्रह्मादिक,खोजत फिरत महामुनि ज्ञानी।।
प्रेमभक्ति करि हरिवश कीन्हे,साँवरी सूरत हिय लपटानी।।
तुलसीश्याम मैया तेरोयश गावे,भक्ति दान दीजै सुखदानी।

आरती ७३

मिल कीजै सद्‌गुरू आरती मिल कीजै।।
जिनकी चरणकमल रज सुंदर, भव दुख सकल निवारती।।

वाणी अमतमय सुन जिनकी, बुद्धि ब्रह्म को धारती।।
दया से जिनके द्वैत दूर हो, मन की माया टारती।।
पाकर के विज्ञान ज्ञान को, पूर्ण शान्ती विस्तारती।।

आरती ७४

ज्योति से ज्योति जगाओ सद्‌गुरु।।
मेरा अंतर तिमिर मिटाओ सद्‌गुरु।।
हे योगेश्वर हे परमेश्वर, निज किरपा बरसाओ।।
हम बालक तेरे द्वार पै आये, मंगल दरस दिखाओ।।
शीश झुकाय करें तेरी आरती, प्रेम सुधा बरसाओ।।
साँची ज्योति जगे जो हिय में, सोहं नाद जगाओ।।
अंतर में युग युग से सोई, चित शक्ति को जगाओ।।
जीवन में श्रीराम अविनाशी, चरणन शरण लगाओ।।

आरती ७५

आरती श्रीगुरुदेव की कीजै।
दर्शन करि नयनन फल लीजै।।
हृदय थार प्रेम की बाती,
ज्ञान की ज्योति जरे दिन राती,
गुरु वाणी अंधकार मिटाती,
तन मन धन गुरुपद धरि दीजै।।१।।
वेदवाक्य सम गुरु की वानी,
गुरु सेवा गोविन्द मिलानी,
गुरुसम नहिं कोइ जग में दानी,
अपनो जीवन सुफल करीजै।।२।।
ब्रह्मा बनि गुरु जन्म कराते,
नारायण ह्वै सद्‌गुण लाते,
रूद्र रूप अवगुणहि जराते,
चरण शरण पड़ि पापन छीजै।।३।।

होवत श्रीगुरुदेव दयाला,
करि हरि शरण छुडा जंजाला,
करते धन्य मिला नन्दलाला,
ऐसे गुरुवर के पद मीजै।। ४।।

हरि रूठे गुरु लेहिं बचाई,
गुरु रूठे त्रिभुवन कोउ नाही,
उभय लोक गुरु कपा बनाई,
गुरुचरणामत भरि भरि पीजै।।५।।

गुरुपदरज जो तिलक लगाये,
गुण निकाय करतल गत पाये,
दिव्य दष्टि हो अंजन लाये,
रहो सदा हरि रस में भीजै।।६।।

करें कपा गुरु राम मिलावें,
अनपायनी भक्ति वर पावें,
हरि हरिजन गुण मुख नित गावें,
सियाअनुज प्रभु जुग जुग जीजै।।७।।

आरती ७६

करु आरती अपने गुरुवर की।
हरिनाम मधुर मधु मधुकर की।।

गुरु रहनि सरोरूह सरवर की।
हिय माहिं छबि सियारघुवर की।।१।।

हो कपा जबै गुरु मनहर की।
बस चले ना माया दुस्तर की।।२।।

वाणी अंकुश मन कुंजर की।
अनुगत हिय सद्गुण संचर की।।३।।

गुरु बिन आशा नहिं भव तर की।
गुरु से झाँकी हो गिरिधर की।।४।।

भइ कपा भक्तमाली वर की।
गइ ऊसरता हिय बंजर की।।५।।

यह चाह सियानुज अनुचर की।
रहे छाँह सतत् गुरुवर कर की।।६।।

आरती ७७

आवू आवू आवू बहिना आरती उतारू हे।
संतन की वाणी सुनि जीवन सुधारू हे।।
रामायण-भागवत नाहीं बजारू हे।
कलि में भक्तन के हित वांगमय अवतारूहे।।
अर्जुन के मिस किये गीता विस्तार हे।
अमत बहाये धरा जीव उपकारू हे।।
मीठी मीठी वाणी सुनि हियरा में धारू हे।
राग द्वेष मोह व्यथा सबही बिसारू हे।।
सत्संग में रहें नित युगल निहारू हे।
सियानुज पहुना को नयना में धारू हे।।

आरती ७८

जय भगवद्गीते, मैया जय भगवद्गीते।
हरि हिय कमल विहारिणि, सुन्दर सुपुनीते।।
कर्म सुमर्म प्रकाशिनि, कामाशक्ति हरा।
तत्वज्ञानप्रकाशिनि, विद्या ब्रह्म परा।।
निश्चल भक्ति विधायनि, निर्मल मलहारी।
शरण रहस्य प्रदायनि, सबविधि सुखकारी।।
राग द्वेष विदारिणि, कारिणि मोद सदा।
भवभय हारिणि तारिणि, परमानन्द प्रदा।।
आसुर भाव विनाशिनि, नाशिनि तम रजनी।
दैवी सद्गुण दायिनि, हरि रसिका सजनी।।
समता त्याग सिखावनि, हरिमुख की वानी।

सकलशास्त्र की स्वामिनि, श्रुतियों की रानी।।
दया सुधा बरसावनि, मातु! कपा कीजे।
हरिपद प्रेम दान कर, अपनो कर लीजे।।

आरती ७६

आरती भक्तमाल की करिये।
भक्तिभाव निज उर मँह भरिये।।
भक्तमाल भक्तन की माला,
भक्तन के प्रिय चरित रसाला,
सुनत सप्रेम लाड़िली लाला,
युगल कपा लहि भवनिधि तरिये।।१।।
भक्तमाल प्रभु को अतिप्यारी,
नाभा अलि ने विरचि सँवारी,
अति आतुर हरि ने उर धारी,
आपहु याहि हिये में धरिये।।२।।
भक्त भक्ति भगवत गुरु चर्चा,
सहृद संत गुरु प्रभु की अर्चा,
लहिय प्रेम बिनु श्रम बिनु खर्चा,
पुनि कबहूँ भव-डर नहिं डरिये।।३।।
आरति हरण आरती होवै,
सकल कलुष कलि कल्मष धोवै,
हरि हरिजन हिय नयननि जोवै,
नारायण प्रभु सतत् सुमरिये।।४।।

आरती ८०

आरती भक्तमाल की कीजै। संत चरित कहि हरि सुख दीजै।
संतन को यह अतिशय प्यारो, भक्ति स्वरूप बतावन हारो।
ग्रंथ सबनि सुख देबे वारो, या पर सबहि निछावर कीजै।।
शांत, दास्य वात्सल्य सिंगारा, सख्यभाव अतिशय हरि प्यारा।

या में पाँचों का निस्तारा, पढ़ि सब भक्तन को सुख लीजै।।
याके श्रोता श्रीहरि अपने, भक्तन को भूलत नहिं सपने।
निज जन नाम लगत हरि जपने, जै जै करुणानिधि की जै जै।।
श्रीसखेन्द यहआरती गावै, भक्तमाल सौं हरिहि रिझावे।
जो गावै तेहि प्रभु अपनावै, श्रीराघव संग मैत्री कीजै।।

आरती ८१

श्रीसरसबिहारीलाल की सब आरती कीजे।
संत सुखद भक्तमाल की सब आरती कीजे।।
भक्तचरित की माल सदा निज उर पर धारे।
भक्तचरित जो कहे सुने तेहि गोद बिठारे।।
भक्तचरित नित सुने बिना नहिं निंदिया आवे।
भक्तन से अति प्रेम भक्त परमात्म बतावे।।
भक्तचरित्र सुनि के सदा दोउ होय सुखारी।
नयनन अश्रु पूरि थकित स्वर हिय बलिहारी।।
भक्त भक्ति भगवंत गुरु चहुँ अहैं अभेदा।
रूप धरे ज्यों सियाअनुज जग चारों वेदा।।

आरती ८२

राघव की हिय हार, केवल भक्तकथा।।
मंगल आरती उतार, केवल भक्तकथा।।
श्रीनाभाअलि माल बनाई, सियराघव के मन अतिभाई।
जाने प्रिय उपहार,केवल भक्तकथा।।
किये प्रिया विस्तार,केवल भक्तकथा।।
चारोंयुग के भक्त सुजाना,कहि परमात्म परमात्म बखाना।
पल न सके जेहि छार,केवल भक्तकथा।।
लेवें हिय में धार,प्यारी भक्तकथा।।
भक्तचरित जो सुने सुनावे,तिनको हरि निज गोद बिठावे।
लगे अमिय की सार,केवल भक्तकथा।।

सुनि सुनि हों बलिहार,केवल भक्तकथा।।
सियाअनुज यह आरती गावे, गुरुगोविन्द के मनको भावे।
भव से करे जो पार,केवल भक्तकथा।।
मिले युगल सरकार,केवल भक्तकथा।।

आरती ८३

आरती उतारो सखि सियवरलाल की।
भक्त प्रतिपाल की औ श्रीभक्तमाल की।।
रस की रसीली प्यारी अमिय रसाल की।
पल पल करे प्रभु हिय खुशहाल की।।
राघव मन भाई यह जस मणि भाल की।
सुनि हुलसावे जैसे गारि ससुराल की।।
कैसी अमुल्य नाभा निधि कलिकाल की।
प्रियादास टीका अहै बड़े ही कमाल की।।
गावै सुनावै झाँकी भक्त छबि जाल की।
सुत ज्यों दुलारे सियाअनुज निहाल की।।

आरती ८४

आरती उतारो सखि श्रीभक्तमाल की।।
भानुदुलारी संग गोविन्दा गोपाल की।।
मोते अधिक संत कर लेखा बोले कपानिधानजी।
डोलूँ मैं पीछे पीछे रसिक भक्त मम प्रान जी।।
भक्तों की चरण धूल को व्याकुल प्रतिपालजी।।१।।
अम्बरीषनप के प्रसंग में पक्षपात प्रभु कीन्हें जी।
तजि के दुर्वासाजी को भक्त भूप गहि लीन्हें जी।।
भक्तों को स्वामी माने ऐसे कपाल जी।।२।।
भक्तचरित सुनिबे को व्याकुल तजि बैकुण्ठ सिधावें जी।
लागे प्राणन से प्यारे भक्त सुयश जो गावें जी।।
सियानुज के सजन संघाती सियारघुलाल की।।३।।

आरती ८५

भक्तचरित रसमाल की,सब आरती कीजे।।
श्रीराधागोविन्दलाल की, सब आरती कीजे।।
चारोंयुग भक्तों की गाथा, सुनि सुनि हर्षित हों रघुनाथा।
अद्‌भुत अमिय रसाल की, सब आरती कीजे।।१।।
पंच भाव भक्ति के सुदंर, पाँच रंग के फूल मनोहर।
भक्ति जगत के भाल की, सब आरती कीजे।।२।।
निज गुण सुनत अधिक सकुचावत,भक्तचरित सुनि के हरषावत।
सियाअनुज प्रतिपाल की, सब आरती कीजे।।३।।

आरती ८६

श्रीसद्‌गुरु कपाल की, सब आरती कीजे।।
रामप्रिय भक्तमाल की, सब आरती कीजे।।
गुरु आज्ञा नाभा प्रगटाये, प्रियादासजी टीका गाये।
भंजक भव जंजाल की, सब आरती कीजे।।
भक्तमाल सुनिबे को व्याकुल,अहैं चरित्र सब मंजुल मंजुल।
राघव हृदय रसाल की ,सब आरती कीजे।।
इकइक चरित लगें अतिप्यारे,लगते इस दुनिया से न्यारे।
साधक हिय प्रतिपाल की,सब आरती कीजे।।
गुरुकपा अधरामत पीते, सियाअनुज मस्ती में जीते।
झोली भरी कंगाल की,सब आरती कीजे।।

आरती ८७

राघव को लागे अति प्यारी, ये भक्तों की माला।
हम सब लें आरती उतारी, ये भक्तों की माला।।
भक्त चरित जो सुने सुनावे,
राघव ताको गोद बिठावे,
कहते हैं नाभा पुकारी, ये भक्तों की माला।।

जहाँ जहाँ भक्तों की गाथा,
सुनने दौड़ें सियरघुनाथा,
सारे काज बिसारी, ये भक्तों की माला।।
ये माला चरणों में आवे,
पुनि पुनि राघव हृदय लगावे,
पल भर न चाहें उतारी, ये भक्तों की माला।।
सियाअनुज गुरुकपा अघाके,
धनि धनि भक्तचरित को गाके,
सुनि सुनि होंय सुखारी, ये भक्तों की माला।।

आरती ८८

भक्तमालजी की आरती उतारू हे सखी।।
प्यारे लालजी की आरती उतारू हे सखी।।
भक्तमालजी में भक्तिरस भरपूर है।
बिन भक्तमाल भक्ति रूप अतिदूर है।।
कंगाल को भी करदे मालामाल हे सखि।।१।।
भक्तों को प्रभु अपना हृदय बताते।
भक्तों को प्रभु अपने हृदय बसाते।।
भक्तमाल सुनि राघव निहाल हे सखी ।।२।।
भक्त दरश करि हरष अपारे।
राघव के प्यारे और सिया के दुलारे।।
सियाअनुज सहायक कमाल हे सखी।।३।।

आरती ८९

सखी आरती करो भक्तमाल की।
ये अमुल्य निधि अहै कलिकाल की।।
सोहे कनक थाल मणि बाती।
सखि आरती करि हरषाती।।
बलि नाभाअलि प्रतिपाल की।।१।।

भक्तमालजी का एक एक अक्षर।
परमात्म सम जस प्रणवाक्षर।।
है प्राणों से प्रिय गोपाल की।।२।।
ये पंड़ित पछाड़ सद्ग्रंथ है।
समादरणीय जग जेते पंथ है।।
नहिं तुलना में कोई रसाल की।।३।।
ये मूरति जगत बेअंत की।
भक्तमाल सुनि लगे सियकंतकी।।
सियानुज जिन्दगी में कमाल की।।४।।

आरती ९०

आरती श्री रामायण जी की।
कीरति कलित ललित सिय पी की।।
गावत ब्रह्मादिक मुनिनारद,
बालमीक विज्ञान विसारद,
शुक सनकादि शेष अरु शारद,
बरनि पवनसुत कीरति नीकी।।
गावत वेद पुरान अष्टदस,
छओ शास्त्र सब ग्रंथन को रस,
मुनिजन धन संतन को सरबस,
सार अंश संमत सबही की।।
गावत संतत शंभु भवानी,
अरु घटसंभव मुनि विग्यानी,
व्यास आदि कविवर्ज बखानी,
कागभुसुण्डि गरुड़ के ही की।।
कलिमल हरनि विषयरस फीकी,
सुभग सिंगार मुक्ति जुवती की,
दलन रोगभव मूरिअमी की,
तात मात सबविधि तुलसी की।।

आरती ६१

आरती मानस की कीजे। राम रस रोम रोम पीजे।।
रचे शिव मानस में राखे, समय पा गिरिजा से भाखे,
चरित भगवंत, सुने हुनमंत, नहीं हैं अंत,
नेति कहि चरणन चित दीजै।। राम रस रोम...।।१।।
मोहमय देखे भोलेनाथ,गरूड़को किये कागकेसाथ,
कहें खगजति,सुनें खगपति,राम पद रति,
प्रफुल्लित भये सुरस भीजे।। राम रस रोम...।।२।।
विराजे जागबलिक दानी, पूछते भरद्वाज ज्ञानी,
राम हैं कोन, कहें सुखभौन,हरें दुखद्रोन,
मूढ़ जिमि गूढ़ प्रश्न धीजे।। राम रस रोम...।।३।।
कपा कलि कीन्हें तुलसीदास, कियेजन जन मानस में वास,
जीव उपकार, किये भवपार,जहाँ सरकार,
श्रवण करि पापन को छीजे।। राम रस रोम...।।४।।
शेष सनकादिक रस पाये, व्यास शुक बाल्मीक गाये,
जे चरित बखानि,श्रेष्ठ वे दानि,तरे भव प्रानि,
सियानुज हिय में धरि लीजे।। राम रस रोम...।।५।।

आरती ६२

आरती करो मानस की, रामसिय जस की,अलौकिक रस की।।
कलि में मानस हरिअवतारा,
संतों का जीवनआधारा,
पंचम वेद महेश प्रचारा, वेद ऋचा सादश की।।१।।
ज्ञान, कर्म, भगती की श्रेणी,
मानहु जंगम अहै त्रिवेणी,
काण्डसात साकेतनिसेणी, कीर्तिध्वजा दिशिदस की।।२।।
रामचरित श्रीतुलसी गाये,
सुनि के हनुमत हिय हरषाये,

सियाअनुज संतन सन पाये, प्रभु पद में मति घसकी।।३।।

आरती ६३

आरती श्रीमन्मानस की। अलौकिक राम सीय यश की।।
अवध जब प्रगटे भैया चार,
उसी दिन राम चरित अवतार,
दास तुलसी की प्राणाधार,
डोर तुरतहि कलिकी खिसकी। अलौकिक........।।१।।
प्रगट भये सात सात सोपान,
चरित रघुवर की अद्‌भुत खान,
द्रवित हों जिनके हिय पाषान,
सुनत कहि गावत ले सिसकी। आलौकिक.......।।२।।
मिटाये भेद शैव-शाकट्य,
सौर्य-श्रीवैष्णव अरु गाणपत्य,
किये भक्तों की दूर विपत्य,
न उपमा ऐसे पारस की। अलौकिक.......।।३।।
सुनें हनुमत जहँ जहँ कोइ गाय,
नयन में अश्रु हृदय हरषाय,
देइ सियवर से तुरंत मिलाय,
सियानुज उपमा नहिं इसकी। आलौकिक.....।।४।।

आरती ६४

मानस की आरती उतारो, हे सब तन मन वारो।।
रचे शंभु यह चरित ललामा,
राम चरित मानस एहि नामा,
तुलसी सुघर सँवारो, हे सब तन मन वारो।।
मानस राम नाम की महिमा,
प्रगटे तुलसी अद्‌भुत गरिमा,

सतत् हिये में धारो, हे सब तन मन वारो।।
चार धाट के श्रोता वक्ता,
सभी प्रभु पद में अनुरक्ता,
कपि को प्राणन प्यारो, हे सब तन मन वारो।।
अद्‌भुत है श्रीमानस का क्रम,
सभी पात्र आदर्श अनूपम,
वेदन को विस्तारो, हे सब तन मन वारो।।
रामायण राघव का घर है,
अक्षर अक्षर अति सुंदर है,
सियानुज राघव सारो, हे सब तन मन वारो।।

आरती ६५

कीजे आरति आज श्री राम चरित मानस की।
संतन जीवन प्राण अलौकिक खान सुरस की।।
गौरी शिव संवाद लोक भाषा में गाये।
सुनि सुनि श्रौता का मन मानस अति हरषाये।।
छन्द सोरठा दोहा अद्‌भुत श्लोक चौपाई।
इक इक अक्षर रमते जिसमें सिय रघुराई।।
सात काण्ड में विरचि वांगमय रूप राम का।
परम सिद्ध अरु गिद्ध सभी के मन विराम का।।
करि विश्वास नवाह पाठ हनुमंत सुनावे।
रिद्धि सिद्धि अणिमादिक सब क्षण में मिलि जावे।।
सद्‌गुरु कपा प्रसाद भिखारी सियनुज गावे।
रामचरण में भक्ति दास तुलसी से पावे।।

आरती ६६

आरती उतारू सखी मानस रसाल की।
कनक सिंहासन सोहे अवध भुआल की।।

जनक किशोरी संग कौसल्या के लाल की।
शिव मन मानस में राजत मराल की।।
जाऊँ बलिहारी मैं तो तुलसी कपाल की।
राम धाम जाने को बनाई ऐसी पालकी।।
अंजनी के लालजी के हिय को निहाल की।
एक एक शब्द जैसे मणि गजभाल की।।
भक्तों की प्राण संजीवन संतन हिय माल की।
सियानुज को मिली प्रसादी सिय के ससुराल की।।

आरती ६७

मंगल आरती उतारु, सब मिली राम चरित की।
जंगम हरि अवतारु, कलि में अमिय झरित की।।
बाल्मीकि नारद से बूझे,राघव सम चरित्र नहिं दूजे,
तुलसी के सरकारु, वांगमय अवनि तरित की।।
संतन प्राणाधारु, हरि यश कलित ललित की।।
महामंत्र सम जपे महेश्वर,मेटे कठिन भाल के अक्षर,
सभी शास्त्र को सारु, वेद की ऋचा फरित की।।
करती भव से पारु, नाव सी चरणाश्रित की।।
कहहिं, सुनहिं, अनुमोदन करहीं,तिनके हियमें हरि अवतरहीं,
सबहि करें जयकारु, राम सिय अंक भरित की।।
होय चरण में प्यारु, निशदिन सियानुज क्रित की।।

आरती ६८

जय श्रीराम कथा, प्रेम से सुनिये राम कथा।
श्रवण करत श्रद्धा से, करदे दूर व्यथा।।
शिव आज्ञा तुलसी ने, सब सद्‌शास्त्र मथा।
राम चरित मानस सा, अद्‌भुत ग्रंथ गथा।।
जहाँ जहाँ कोइ गावे, गाथा दाशरथा।
आइ बिराजें हनुमत, सुने कथा त्रिपथा।।

अबलौं कोइ नहिं पायो, मानस इति अथा।
बड़े बड़े गुणिजन की, हो गई दौड़ वथा।।
मानस बिन नहिं मानस, सुधरे मनोरथा।
सियाअनुज पायो रस सद्‌गुरु संत प्रथा।।

आरती ९९

जय राघव सीता, मेरे जय राघव सीता।
राम कथा मानस की, सुंदर सुपुनीता।।
शिव प्रसाद से तुलसी, मानस के रचिता।
रामचरित मानस सा, काढ़े नवनीता।।
शिव-सनकादिक-हनुमत, छक के रस पीता।
प्रभु चरित्र के बल से, माया को जीता।।
लंका में सीता का, पल युग सम बीता।
हनुमत कथा सुना के, सब दुख हर लीता।।
सियाअनुज के पाहुन, प्यारे कपि मीता।
जुग जुग गुण गण गाऊँ, पाऊँ मन चीता।।

आरती १००

जग की मंगल करणी, श्रीराम कथा।।
भव सागर की तरणी, श्रीराम कथा।।
कंचन थार कपूर की बाती,
ज्योति हृदय में प्रेम जगाती,
मेटे जिय की जरणी, श्रीराम कथा।।
तुलसी की है ये वर रचना,
छूटे जिससे जग का नचना,
आवे जो भी शरणी, श्रीराम कथा।।
राम भरत सा भ्रात प्रेम है,
शंकर जी का सुदढ नेम है,
भक्तों की आचरणी, श्रीराम कथा।।

कोल भील को गले लगाये,
वानर भालू सुसखा बनाये,
गीध की अद्‌भुत करणी, श्रीराम कथा।।
मेरे पहुना कितने प्यारे,
तुलसी मानस में उच्चारे,
सियाअनुज है चरणी, श्रीराम कथा।।

आरती १०१

हम सब श्रीयुगलचरन की, मिलि आरती उतारें।।
मानस सी तारनतरन की, मिलि आरती उतारें।।
इक इक अक्षर श्रीमानस का,
उदधि अथाह अलौकिक रस का,
तुलसी से अशरन शरन की, मिलि आरती उतारें।।
जहँ कहिं राम कथा कोइ गावे,
हनुमत सुनने निश्चय आवे,
तुलसी के मानस श्रवन की, मिलि आरती उतारें।।
सात काण्ड में मानस रचना,
आगम निगम सुसम्मत वचना,
भेदी सप्तावरन की, मिलि आरती उतारें।।
छंद, सोरठा, सुन्दर दोहा,
चौपाई सुनि शिव मन मोहा,
झाँकी करुणाकरन की, मिलि आरती उतारें।।
गुरु प्रसाद वर आयसु पाये,
संतन सन जस सुन्यो सो गाये,
सियानुज राम शरन की, मिलि आरती उतारें।।

आरती १०२

आरती अतिपावन पुरान की।
धर्म भक्ति विज्ञान खान की।।

महापुराण भागवत निरमल।
शुकमुख विगलित निगम कल्प फल।
परमानन्द - सुधा - रसमय कल।
लीला रति रस रसनिधान की।। आरती...
कलिमल मथनि त्रिताप निवारिनि।
जन्म मत्युमय भव भयहारिनि।
सेवत सतत सकल सुख कारिनि।
सुमहौषधि हरिचरित गान की।। आरती...
विषय विलास विमोह विनाशिनि।
विमल विराग विवेक विकाशिनि।
भगवत्तत्व-रहस्य प्रकाशिनि।
परम ज्योति परमात्म ज्ञान की।। आरती...
परमहंस मुनि मन उल्लासिनि।
रसिक हृदय रसरास विलासिनि।
भुक्ति मुक्ति रति-प्रेम सुदासिनि।
कथा अकिन्चन प्रिय सुजान की।। आरती...

आरती १०३

आरती श्रीभागवत प्यारी,करत कटे भव संकट भारी।।
वेदव्यास भगवान स्वयं यह,परमहंस संहिता उचारी।।
गावत सुनत गुनत ताही छिन,हिये बसत श्रीकुंजबिहारी।।
श्रीशुकमुनि महाराज रसिकवर,तिनकी जीवन प्राणअधारी।।
ध्यान परायन लीला गायन,विचरत अवनि सुइच्छाचारी।।
कियो परीक्षित नप पारायण,तक्षक की सब ताप निवारी।।
सप्तदिवस हरियश सुनाय के,दियो पठाय गौलोक मँझारी।।
ज्ञान योग वैराग्य प्रेमनिधि, भवसागर में नौका डारी।।
जीव समूह उधारन कारण,प्रगट करी करि कपा अपारी।।
दीनन की दुखहरन करनसुख,तात-मात की ज्यों हितकारी।
सरसमाधुरी इष्ट हमारी, है सबही विधि मंगलकारी।।

आरती १०४

भागवतभगवान की है आरती।पापियों को पाप से है तारती।।
ये अमर ग्रंथ ये मुक्ति पंथ, ये पंचम वेद निराला ।
नवज्योति जगाने वाला ।
हरिनाम यही हरिधाम यही, जग के मंगल की आरती।।
यह शांति गीत, पावन पुनीत, पापों को मिटाने वाली ।
हरिदर्श कराने वाली ।
यह सुख करणी यह दुख हरणी, श्री मधुसूदन की आरती।।
यह मधुर बोल भव पंथ खोल, सन्मार्ग बताने वाली ।
बिगड़ी को बनाने वाली ।
श्री राम यही घनश्याम यही, प्रभु के महिमा की आरती।।

आरती १०५

आरती श्रीशुकवानी की। श्रीमाधव राधारानी की।।
श्रीउद्धव के हित प्रगटाये,
भागवत रूप मधुर आये,
ये अक्षरधाम, श्याम गुणग्राम, श्रीशालिग्राम,
प्रगट करुणा के खानी की। श्रीमाधव ......।।१।।
साँप नप संत शीश कीन्हों,
शाप शृंगी ने तब दीन्हों,
कटे तक्षक, काल भक्षक, नहीं रक्षक,
सात दिन अवधी ठानी की। श्रीमाधव ....।।२।।
तरा इससे ही धुंधकारी,
किये सब पाप दुराचारी,
भागवत शरण, पड़ा आ चरण, संत गोकरण,
पठाये हरि रजधानी की। श्रीमाधव ....।।३।।
दुखित थे बहुत ज्ञान वैराग्य,
भक्ति के जाग उठे तब भाग्य,

सनकादिक आये, भागवत गाये, नारदहि सुनाये,
सियानुज आनंद दानी की। श्रीमाधव ....।।४।।

आरती १०६

आरती कीजे शुकवानी की।
श्रीमद्भागवत महारानी की।।
संतन को लागत है प्यारी।
प्रगटे कलि में बांकेबिहारी।
संग में श्री राधारानी की।।१।।
ऐसा रसमय ग्रंथ न दूजा।
धर्म सनातन की ये धूजा।
अज से नारायण गानी की।।२।।
भक्तन की आनंद प्रदायनी।
भुक्ति मुक्ति हरिपद रति दायनी।
श्रोतन हिय श्रीहरि आनी की।।३।।
सबको जो भागवत सुनावे।
जग के उत्तम दानी कहावे।
पावे शरण भूप दानी की।। ४।।
जो जन इसकी शरण में आवे।
साते दिन बैकुण्ठ पठावे।
सियाअनुज सब अघ हानी की।।५।।

आरती १०७

जय श्रीमद्भागवत, मैया जय श्रीमद्भागवत।
सकल पुराण शिरोमणि, हरि हिय में आगवत।।
करी कपा नारायण, ये परसाद दियो।
आश्वादन करि निशिदिन,भीज्यो रहत हियो।।
जो साप्ताहिक क्रम से, श्रीभागवत सुने।
हिय में बसें युगलवर, सारे पाप भुने।।

होय सुखद मत्यु अरु, पावे रजधानी।
रहे मोह नहिं कबहू, करे जो गुणगानी।।
श्रीउद्धव हित हरि ने, ऐसो रूप धर्‌यो।
नप मिस करुणा करिके,शुक सब जग उ द्धर्‌यो।।
पूर्ण कपा हो जापै, वो ही ये पावे।
सियाअनुज मांगे वर, जनम जनम गावे।।

आरती १०८

करु आरती श्रीमद् भागवत की।।
अहै पुराण तिलक ज्यों गंगा।
भक्तन हित प्रगटे नरसिंगा।
राधारमण मनभावत की।।
समझे नहिं कोइ इसको पुस्तक।
ये तो है श्रीहरि का मस्तक।
भक्तन हित प्रगटावत की।।
आरति ग्रंथ की जो कोई गावे।
जनम जनम की ग्रंथी छुड़ावे।
सियाअनुज शरणागत की।।

आरती १०९

आरती शुकवाणी पुराण की।
ज्ञान भक्ति वैराग्य खान की।।
श्री हरि अज को गाइ सुनाये।
अज नारद को यह बताये।।
व्यासदेव के मन में भाये।
मूरि अमिय हरि भक्त प्राण की।। १ ।।
व्यास शिष्य जा वन में गाये।
श्रवण सुनत शुक दौड़े आये।।

द्वैपायन भागवत पढ़ाये।
हरिपुर पठवन शुक विमान की।। २ ।।
शाप परीक्षित को जब लाग्यो।
राज त्यागि सुरसरि तट भाग्यो।।
हरि चरणन में मन अनुराग्यो।
रक्षक श्ंगी वाक् वाण की।। ३ ।।
श्रीहरि तेज छिपाइ पधारे।
लखि नप गति विधि अचरज भारे।।
बड़े बड़े पंड़ितजन हारे।
अहै कसौटी बुद्धि ज्ञान की।। ४ ।।
कथा श्रवण विचार कर कोई।
हरि अवरुद्ध ह्रदय तेहि होई।।
विमल भक्ति पावे नर सोई।
सियाअनुज करुणानिधान की।। ५ ।।

आरती ११०

आरती करो नरनारी कि मंगलकारी, भागवतप्यारी की।।
हरिने अज को प्रथम सुनाया,परमधर्म हरिभक्ति बताया।
चार श्लोक उच्चारी।।१।।
हरि ने उद्धव को समझाया, रूप भागवत का प्रगटाया।
कलि में होय प्रचारी।। २ ।।
गंगातट शुकदेव पधारे,सात दिवस भागवत उचारे।
परीक्षित उद्धारी ।। ३।।
नारद सनकादिक उपकारी,ज्ञान विराग भक्ति सुखकारी।
तट आनंद हरिद्वारी ।। ४।।
सद्गुरू कपा भागवत पाये,धन्य भये फूले न समाये।
सियाअनुज बलिहारी ।।५।।

आरती १११

श्रीभागवत पुराण की मिली आरती कीजै।
ज्ञान भक्ति वैराग्य की रस धार में भीजे।।
कंचन थार कपूर की बाती,
करि आरती कथामत पी, श्रवणन फल लीजे।।
निगम वक्ष के मीठे फल को,
निशिवासर संतन ढ़िग में, जा पान करीजे।।
बहुत जनम को पुण्य होय जब,
तब भागवत सुप्राप्य होय, निश्चिय जू पतीजे।।
ज्ञान विराग जगे जेहि सुनि के,
नचै भक्ति जहँ आइके, लखि ऋषि मुनि रीझे।।
तरे धुधंकारी सम पापी,
आपहु आ रस पान करी, पापन को छीजे।।
हरि हू धाम छोड़ि चलि आये,
सह परिकर हरि नाम सुधा, मदमत ह्वै पीजै।।
जड़ वक्षन में पैठि कहे ज्यों
त्यों सियअनुज विराजि हिये, शुक कथा कहीजे।।

श्रीराधाकपा चालीसा

दोहाः- राधाकपाको याद करि, राधा राधा गाइ।
राधाकपा रज शीशधरि,राधा शरण में आइ।।
राधाकपा से बंदउँ, गुरु,गौरीश,गणेश।
राधाकपा चाहूँ सदा, अरु बजमंडल देश।।

चौपाई

राधाकपा सुमंगल मूला। राधाकपा भवसागर कूला।।
राधाकपा से बज बड़भागी। राधाकपा से होइ विरागी।।
राधाकपा तजि जग की आश।राधाकपा वन्दावन वास।।
राधाकपा तिहुँलोक महान। राधाकपा सम नहिं कछु आन।।
राधाकपा ही संत मिलावे।राधाकपा से मोह नसावे।।
राधाकपा ही जीव जगावे। राधाकपा अनुराग बढ़ावे।।
राधाकपा प्रगट बरसाना। राधाकपा से आवे कान्हा।।
राधाकपा बनावे गोपी।राधाकपा सम आन न कोपी।।
राधाकपा रास रस पावै। राधाकपा वेद चहुँ गावै।।
राधाकपा सुविद्या माया।राधाकपा धन्य जो पाया।।
राधाकपा बिन जन जन तरसे।राधाकपा जन जन पर बरसे।।
राधाकपा श्याम सिरताज। राधाकपा भक्त रसराज।।
राधाकपा संत संपत्ति। राधाकपा बिना विपत्ति।।
राधाकपा श्याम रंग रंगे।राधाकपा से हृदय उमंगे।।
राधाकपा बजराज रिझावे।राधाकपा में रसिक नहावे।।
राधाकपा दूध में मक्खन।राधाकपा राम संग लक्खन।।
राधाकपा वेद सम पावन।राधाकपा ज्यों बरसे सावन।।
राधाकपा सुमन महँ गंध।राधाकपा नयन ज्यों अंध।।
राधाकपा सुधा रसनिधि। राधाकपा से पावे सिधि।।
राधाकपा भागवत प्रगटी।राधाकपा से शुकमुनि उघटी।।

राधाकपा पार की धारा। राधाकपा से अमत हारा।।
राधाकपा जीवन की मूरी। राधाकपा छूटे जग जूरी।।
राधाकपा से मंगल होवे।राधाकपा पा सुख से सोवे।।
राधाकपा से होइ अनंदा। राधाकपा तारों में चंदा।।
राधाकपा नदिन में गंगा।राधाकपा ज्यों तन पै अंगा।।
राधाकपा गौर प्रगटाये। राधाकपा में जगत डुबाये।।
राधाकपा से कलि में संत। राधाकपा स्वरूप अनंत।।
राधाकपा गोपीजन गावे। राधाकपा श्याम मिल जावे।।
राधाकपा अहै चहुँ ओर। राधाकपा सम कोउ न और।।
राधाकपा त्रेता में सीता। राधाकपा द्वापर में गीता।।
राधाकपा से हितहरिवंशा। राधाकपा से पाइ प्रशंसा।।
राधाकपा व्यास हरिराम। राधाकपा पाइ अभिराम।।
राधाकपा से नागाबाबा। राधाकपा तपस्वी ना भा।।
राधाकपा युगलवर आये। राधाकपा जटा सुलझाये।।
राधाकपा से जीवन नीका। राधाकपा बिन सबकुछ फीका।।
राधाकपा मिले विश्राम। राधाकपा बिन सरे न काम।।
राधाकपा मन निर्मल होवे। राधाकपा कलि कल्मष खोवे।।
राधाकपा भरोसा भारी। राधाकपा सम कोउ न प्यारी।।
राधाकपा पढ़े चालीसा। राधाकपा रीझे जगदीशा।।
राधाकपा सियानुज पाई। राधाकपा गाइ हरषाई।।

दोहाः- राधाकपा से रसिकजन, सबविधि रहें निहाल।
राधाकपा से हृदय में, बसे लाड़ली लाल।।

oooooooooooooooooooooooo